

आर्य

ఆర్య జీవన



जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
పాండి-తెలుగు ద్వితీయ పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

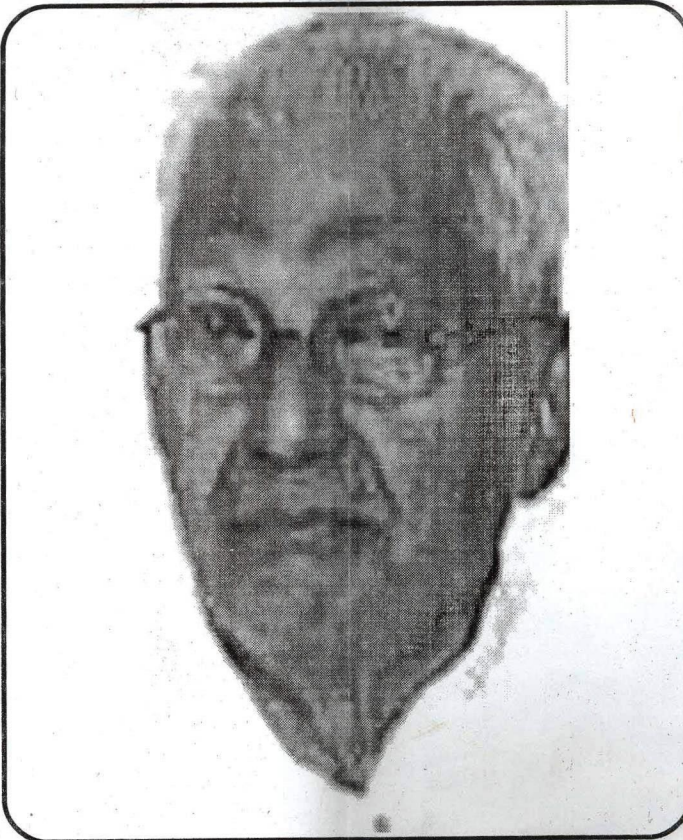
दिवंगत नेता

चेन्नमनेनि राजेश्वर राव जी को

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

भावभिनि श्रद्धांजलि

आर्य प्रतिनिधि सभा, से ९ मई २०१६ को स्वतन्त्रता सेनानी, राजेश्वर राव जी के श्रद्धांजलि अर्पित की गई राजेश्वरराव जी बड़े निज़ाम के निरंकुश शासन में निर्भिकता से भाग प्राप्ति के बाद आपने लिया। छह बार विधान और प्रशंसनीय भूमिका राजेश्वरराव जी आर्य थे। युवावस्था में ही समाज की गतिविधियों किया था। अन्याय के आर्यनेता, हैदराबाद के नरेन्द्रजी को अपना प्रेणा-समाज के निमंत्रण पर अनेक कार्यक्रमों में भाग मार्ग दर्शन भी किया।



आ.प्र.-तेलंगाना की ओर दिवंगत विख्यात राजनेता चेन्नमनेनि निधन पर भावभिनि ।

ही समरशील योद्धा थे। में आपने सशस्त्र संघर्ष लिया था। स्वतंत्रता सक्रिय राजनीति में भाग सभा में विधायक रहे निर्भाई।

समाज के बड़े अभिमानि १९४२ में आप आर्य में भाग लेना प्रारम्भ विरुद्ध संघर्ष करने में वे लौह पुरुष पंडित स्रोत मानते थे। आर्य वर्तमान में भी उन्होंने लिया और सराहनीय ऐसे महान नेता के

वियोग से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। अन्तयेष्टि के दिन आपके आवास पर सभा के प्रतिनिधि डा. लक्ष्मण सिंह आर्य, रामचन्द्रकुमार, गुरुनारायण तथा वेंकट रघुरामुलू एडवोकेट आदि पहुंचकर उनके पार्थिव शरीर पर मात्कार्यण किया और परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिए प्रार्थना की।

-आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना

Arya Jeevan



১৫৫৫

అయినది సునికల వృష్టి తెలంగాణ తెలంగాణ
స్థాయిల ప్రాంతాలనుండి అర్ధ తెలంగాణ వీరిపై
దీర్ఘకాలిక అంధత్వముగా వ్యాపించి ముందు అయిన
అనుభవాల ద్వారాను, సుదీర్ఘ కాలము ప్రయా
ణం అనారంభించు ఎదిరిని నిలవడంపైను
తెలంగాణ స్వయంపూర్వకతను రుద్రైస్తవ వృద్ధిలోను
అయిన అకంఠ చేతువన్న కీడు అభ్యుదయపైను
అనేకమైన కలెక్షన్లను రావి నానామధ్యక, బద్ధం
పెట్టెడి, అదృష్ట మొదలైన కారణం కమ్యూనిస్టుల
కవీ పరివేషన విధానమున ఎల్లెడలా చెప్పుచున్న
మాటలన్న పరిస్థితులను, ప్రజా
తైర్వేదంలో పాదములన్న మాటలను వినిపి కారణ
పరికరించి, సాధికారికంగా భర్తించి, అనేకవిధానకర
విధానాక- అది నన ప్రైవేట్లకే చెల్లందో కాదుచరిం



దరి విశ్వసించిన రుకావ నిర్మలానికి మళ్ళీ స్వరూపం
అయినది అచ్చాగి రసి ముడి స్వరూపు మూం
స్వరూపం కాయమనీ ఒక్కమాటలో అయిన దానినై
వాడి తెలుగూ ప్రత్యేక రాష్ట్ర ఉత్పన్నులలో ఆంగన
స్వరూపాలు ముద్రైస్త సేతు అమరకానంది అమృత
రుసి పరిసరకాయన.

[illegible]

గురు సేవాయతః సప్తాను రెలంగా దైతాగి
 సాయుధ సోదామశ్చేదీ రక్తం అవిర్భవించుచో దేవ
 సేవతత్సర్వ మహిమం అనందం కలుగుచును
 అప్రేక్ష్య ఇదో తత్త్వ మేవీర్థ సాగ్నో అని అయిన అదే
 మహి అయ్యది రెలంగాద ప్రత్యేక రాష్ట్ర శక్తిమం ఈ
 రకం మహిమ లెనిగ దాదాక అభిరేచనాదే ప్రతి
 సోదా మునీ గురూ మహిమి మానసాదేయంగా
 సోదాన అయిన నేడు మహావి ప్రస్థంశండావ
 లిని అదావారంపట విధుధుధులు కాని ప్రాప్త్యం
 రెక్క ముహూర్తాలి రాష్ట్ర కాలంలో అయిన గురున
 దుబాగా తప్పదు రెలంగా సోదామ ముఖ్యంగా
 నీటి సోదావల రంబలో ప్రస్తావననీ ప్రాప్త
 కలుగును. రెయిన ప్రస్తుతాయు రంగానీ ప్రాప్త
 రంబం వాటి నియమ కావని ప్రాప్త్యంబాదాదీని
 రాష్ట్రయనేని అశీర్వాదంబలెవడిని రెయినెక్కాదీని
 వాటికి నియంత్రణనీ అని ప్రాప్త్యంబలను వాస్తవనీ
 అయిన ప్రాంతంలో సాగునీటి రంగునందే పెద్ద ప్రాజె
 క్టులు కలువం వ్యవసాయము రెలంగాదలో రెయిన
 ముంబులు ఉండవ గతక వాటికి నియంత్రణనీ ప్రాప్త
 నందెక్క అభిప్రాయం కాదేలు. అయినో అనేక అన
 రకాలయ అయిన అప్రేక్ష్య మాట వివరించారు. పెద్ద
 మన్న సందర్భం. వారావరణం అయిన సమకాలియ
 అని భవిష్యవనము వ్యక్తం చేయ కానీ ఆ రకం
 అయిన. మహాన రెలంగాద ప్రాప్త్యము మాన జీవ
 సోదాన రాష్ట్ర సోదామమనీ ప్రస్తుతంలో అనిగ
 సోదావలయ రాష్ట్రరంగా కనియదారు. అకామం
 సేయవలందే సాగరంబులు

ತೆಂಗಾಣ ರಸ್ತೆ ಮಲ್ತಾಯಿ ಪ್ರತಿಭೆ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದಾಳು. ಮರಿ ಮೈಸ (2008 ವಿಜಯ ಕಾವ್ಯನಿ) ಕರವರ ಬಂಧವಾ ನಾಯಕರು ಯುವರೈ ಕಿವಿವೆವೆಂ ಅನ್ನಿ ಶರಣ ರೆವೆ ಕನಕಬ್ಬಾಪ್ಪ ಅನ್ನಿ ರೆವೆ (ತನ್ನಿ) ಮೂ ರಾಜ್ ಕುಂದ ಪುನರುರು. ಈ ರೆವೆ ಪ್ರತಿಭೆ ಸತ್ಯಾಪ್ಪ, ಸತ್ಯಾಪ್ಪ ಪ್ರವಾಸಿ ರಾಜ್ ಕುಂದ ಮುಖಾಂತರ ಸತ್ಯಾಪ್ಪ, ಸತ್ಯಾಪ್ಪ ಅಮಮ ರಾಜ್ ಕುಂದ ಸತ್ಯಾಪ್ಪ ಪ್ರವಾಸಿ. ಅನಂದಾದು. ತೆಂಗಾಣ ಮೈಸರೈ ಪ್ರವಾಸಿ. ಅನಂದಾದು. ಕಿವಿ ನಮುಂದೆ ಗಾಳಿ ಸತ್ಯಾಪ್ಪ ಅ ರಾಜ್ ಕುಂದ

(రచయిత - కరీంనగర్ వార్తాపత్రిక)

आर्य बलिदान दिवस पर विशेष

पं. लेखराम का जन्म ८ चैत्र संवत् १९१५ वि. शुक्रवार के दिन अविभाजित पंजाब के झेहलम जिले के ग्राम सैयदपुर में मेहता तारासिंह के गृह में हुआ था। अपने पिता की ज्येष्ठ सन्तान थे। इनके पितामह श्री नारायणसिंह सैयदपुर के हाकिम सरदार कान्हासिंह गिल मजीठिया के यहाँ घुछसवार थे मात्र ६ वर्ष की आयु में इन्हें उर्दू फारसी पढ़ने के लिए मदसरे भेजा गया आप मेधावी थे। फारसी के कठिनतम पाठों को भी कभी दुबारा नहीं पूछा एक बार में ही कंठस्थ कर लेते थे। मिडिल की परिक्षा में जब इतिहास का पर्चा आया तो उत्तर न देकर उन प्रश्नों का खण्डन शुरू कर दिया। नतीजा जहाँ अन्य विषयों में प्रथम श्रेणी के अंक आए इतिहास में फेल हो गए संयोग की बात थी कि इसी इतिहास के अनुत्तीर्ण छात्र को पेशावर जिले के हाकिमों ने पांच वर्ष बाद जिले के इतिहास के लेखक का कार्य सौंपा। २१ दिसम्बर सन १८५७ को लेखराम को उनके चाचा ने मात्र १७ वर्ष की आयु में पेशावर पुलिस में भर्ती करा दिया उन्नति करते करते सार्जेंट के पद पर पहुँच गए। एक सिक्ख सिपाही के सत्संग से उन्हें परमात्मा की उपासना का अभ्यास हो गया। २१ वर्ष की आयु में इनकी माता ने विवाह की तैयारी की परन्तु वैराग्य की लहर में इन्होंने विवाह से निषेध कर दिया गीता पर किसी का भाष्य पढ़ते हुए उन्हें मुन्शी कन्हैया लाल अलखधारी के ग्रन्थों को देखने की उत्कण्ठा हुई। तत्काल ग्रन्थ मंगा लिया उन ग्रन्थों के पढ़ने से इन्हें ऋषि दयानन्द के नाम और काम का पता चला समाचार पत्रों में उन दिनों ऋषि दयानन्द की धूम मची हुई थी। लेखराम जो पुरे अध्येतवादी बन चुके थे को तिलांजलि देकर संवत् १९३७ के अंतिम भाग में पेशावर में माई रन्जीदेवी की धर्मशाला में जहाँ वे रहते थे आर्य समाज की स्थापना कर दी। लेखराम अन्य मतों की तो युक्तिपूर्वक

आलोचना करते थे परन्तु नवीन वेदान्ती मित्रों से बातचीत में कभी कभी निरुत्तर हो जाया करते थे अतः संशय मिटाने और ऋषि दयानन्द का आशिर्वाद लेने के लिए ५ मई सन सेठ फतमहल की वाटिका में पहुँचकर ऋषि के दर्शन किए ऋषि के दर्शनार्थ अजमेर चल दिए १७ मई को सेठ पतहमल की वाटिका में पहुँचकर ऋषि के दर्शन किए ऋषि से वार्तालाप के अनन्तर लेखराम ने जो प्रश्न पूछे और ऋषि ने जो उनके सटीक उत्तर दिए उससे उनका विश्वास वैदिक धर्म पर चट्टान की भाँति दृढ़ हो गया अजमेर से वापस आकर धर्म प्रचार में लग गए और आर्य समाज पेशावर की ओर से उर्दू का मासिक पत्र धर्मोपदेश निकालना प्रारम्भ कर दिया एक बार एक मुसलमान अधिकारी इपसे शास्त्रार्थ में उलझ गया जब लेखराम के प्रश्नों का उत्तर न दे सका तो उसने खीझकर इनका सार्जेंट का पद निरस्त का दिया परन्तु इन्होंने उसकी चिन्ता न की जून सन १८८४ ई. में सार्जेंट लेखराम को पेशावर से थाना सुआबी स्थानान्तरित कर दिया गया। लेखराम २४ सितम्बर १८८४ ई. को त्यागपत्र लेकर मनुष्यों के दासत्व से मुक्त हो गए और अब लेखराम पण्डित लेखराम बन गए। वैदिक धर्म के अनंत सेवक हो गए संवत् १९४० में ऋषि की मृत्यु हुई। इस मृत्यु ने इन्हें अधीर कर दिया सारे संसार को वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे लाने का अपनी ही कर्तव्य समझ लेखराम धर्मवीर का पद प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुए। आर्य जाति का कोई व्यक्ति इसाई मुसलमान हो तो उसे बचाने का आर्य समाज पर विपक्षी के आक्षेप का उत्तर देने का काम इनका था। जम्मू के ठाकुर दास नामी हिंदू को ये तीन चार बार छुट्टी लेकर गए और उसे समझाकर मुसलमान होने से बचाया। सन १८८६ के आरम्भ में लेखराम की योग्यता की धूम मच गई। सन १८८७ में पण्डित जी को आर्य गजट फिरोजपुर का

सम्पादक बनादिया गया ऋषि की मृत्यु को साढ़े चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे। जनता उनके जीवन चरित्र की मांग कर रही थी। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने १ जुलाई १८८८ के अधिवेशन में निश्चय किया कि ऋषि के जीवन का वृत्तका अन्वेषण करने के लिए पंडित लेखराज को नियुक्त किया जाे। नवम्बर १८८८ में आर्य गजट के सम्पादक को पद त्याग कर लेखराज आर्य मुशाफिर बने। ऋषि जीवन का अन्वेषण उन्होंने लाहौर से प्रारम्भ किया धर्म प्रचार भी साथ साथ होता रहा लाहौर से जालन्धर मथुरा होते हुए अजमेर से पहुँचे। यहाँ से मिर्जापुर काशी होकर दानापुर १७ जनवरी १८९१ को पहुँचे यहाँ आर्य समाज के नाम नाम तार आया कि पण्डित जी जीवित हैं या नहीं? किसी शत्रु ने पण्डितजी के घर पर उनकी मृत्यु की सूचना भेज दी थी। तार का जबाब दे दिया गया यहाँ लेखराम जी ने खडगविलाश प्रेस से कवि वचनसुधा की फाइल लेकर ऋषि का कुछ जीवन वृत्त नोट किया। यहाँ तत्कालीन मंत्री डॉ. मुशीलाल शाह ने जो पत्र स्वामी श्रद्धानन्द को लिखा या उससे ज्ञात होता है कि पं. लेखराम का विचार सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद करने का था वे स्वतंत्र रूप से अरब मिश्र अफगा निस्तानादि देशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते थे यहाँ से कलकत्ता होकर कुम्भ पर हरिद्वार पहुँचे। हरिद्वार से लाहौर होकर बैसाख १९४८ सक्कर से हैदराबाद (सिन्ध) पहुँच जहाँ पर एक रईस परिवार को मुसलमान होने से बचाया इन्हीं दिनों उन्होंने ख्रिश्चियन मत दर्पण तथा तारीख ए दुनिया पुस्तक की रचना की सन १८९२ के अक्टूबर नवम्बर के महने उन्होंने ऋषि दयानन्द की जन्म भूमि की खोज में बिताए। बैसाख संवत् १९५० में पंडित लेखराम ३५ वर्ष के हो चुके थे उसी वर्ष ज्येष्ठ मास में वे घर गए और भरी पर्वतान्तर्गत भन्न ग्रामवासिनी कुमारी लक्ष्मीदेवी के साथ

उनका विवाह हुआ पण्डितजी ने अपने इस विवाह के पश्चात अपनी पत्नी को भी पढ़ाना प्रारंभ कर दिया इन्हीं दिनों अमेरिका के शिकागो नगर की प्रदर्शनी की तैयारियां हो रही थी आर्य समाज की ओर से विशेष प्रतिनिधि भेजने पर विचार हो रहा था लेखराज ने एक अपील छपवाकर मार्गव्यय और एक अंग्रेजी के सुयोग्य विद्वान की सेवा मांगी। यद्यपि कोई तैयार न हुआ परन्तु इससे उनका धर्म के प्रति उत्कट प्रेम सिद्ध होता है। यदि वे अंग्रेजी जानते होते तो अवश्य अमेरिका जाते पंडितजी सन्या वन्दन के बड़े पक्के थे एक बार महात्मा मुंशीराम के साथ शिक्रय में लुधियाना से जगरांव जा रहे थे मार्ग में पानी लेर शौच गए लौटने पर पता लगा कि हाथ पैर धोने और कुल्ला करने के लिए पानी नहीं है संध्या का समय हो चुका था पंडितजी संध्या करने बैठ गए। जब संध्या समाप्त कर चुके तब एक व्यक्ति ने दिल्ली में पूछा पण्डितजी क्या पेशावरी संध्या कर चुके पण्डितजी ने गंभीर स्वर में कहा तुम पोप हो जो बिना पानी मिले ब्रह्मयज्ञ नहीं कर सकते भोले भाई स्नान कार्य हुआ न हुआ परन्तु संध्या कर्म है और उसका न करना पाप है पण्डितजी व्यायाम भी नित्य करते थे पण्डित पण्डितजी के घर में १८ मई १८९५ को पुत्र उत्पन्न हुआ बच्चे को नामकरण संस्कार किया और २२ मई १८९५ को पुनः धर्म प्रचार हेतु घर से चल दिए जब २६ अगस्त को जालंधर लौटे तो पुत्र बीमार मिला २८ अगस्त को पुत्र की मृत्यु हो गई परन्तु पण्डितजी के चेहरे पर विषाद की रेखा न आने पाई एक इन्हें पता लगा कि पटियाला रियासत में एक व्यक्ति आर्य धर्म छोड़ रहा है आप ट्रेन पर सवार होकर चल दिए जब गाड़ी लुधियाना से आगे चली एक व्यक्ति ने पूछा आप कहाँ जाएंगे उन्होंने कहा चाबा पायल उसने बताया वहाँ तो गाड़ी ठहरती ही नहीं है जब गाड़ी चाबा पायल रेलवे स्टेशन पर पहुँची और न रुकी तब चलकर पायल पहुँचे और समाज के मंत्री को साथ लेकर उस व्यक्ति के पास पहुँचे पण्डितजी ने उससे कहा कि मैंने सुना है आप हिन्दू

धर्म त्याग कर किसी अन्य धर्म में जा रहे हैं कृपाकर बताइए कि इस धर्म में क्या दोष है तथा उस मत में क्या विशेषता है उस व्यक्ति ने कहा पहले आप यह बताएँ कि आपकी यह दशा कैसे हुई कपड़े फटे हैं शरीर पर खरोँच के निशान हैं पण्डितजी जिस मत में आप जैसे जान पर खेलने वाले पुरुष हों मैं उस धर्म को कभी नहीं छोड़ूँगा। पंडित लेखराम जी मार्च १८९६ में अजमेर आर्य समाज के उत्सव में गए नगर कीर्तन में उनके व्याख्यान और बातचीत से कुछ मुसलमान भडक उठे ख्वाजा चिश्ती की दरगाह पास थी आर्य भाई डर कर भाग गए लेखराम अकेले रह गए उन्होंने सुना था कि विधर्मी की धर्म स्थल से ३० कदम दूरी पर प्रत्येक कार्य प्रचारक को अपने मत समर्थन का अधिकार है आप दरगाह के द्वार पहुँचे और उच्च स्वर से कदम गिनना शुरू कर दिया मुसलमान इनके कृत्य को आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे तीसवें कदम पर पहुँच कर लेखराम ने धर्म प्रचार शुरू कर दिया कब्रपरस्ती और मर्दुमपरस्ती का जबर्दस्त खण्डन किया जब पीछे से कुछ आर्य समाजी चुपके से लेखराम की दशा देखने गए तो वे आश्चर्यचकित हो गए सहस्रों मुस्लिम जनता की बड़ी संख्या उनका भाषण तन्मय होकर सुन रही थी आर्य पथिक पण्डितजी लेखराम के आक्रमणों से खवन मत मंदिर को ढहता देख मुसलमानों ने उन पर मिर्जापुर अमृतसर लाहौर दिल्ली और बंबुई में मुकदमे चलाए इनमें से एक को छोड़ कर शेष सभी इन्हें न्यायालय द्वारा पेश न होने पर भी खारिज कर दिया गया फरवरी १८९७ के मध्य एक काला गठे हुए बदन कीयानक नाटा युवक पण्डितजी का पता पूछता पूछता उनके निवास स्थान पर पहुँचा और निवेदन किया कि वह दो वर्ष पूर्व हिन्दू था अब मुसलमान हो चुका है तथा पुनः वैदिक धर्म में दिक्षित होना चाहता है पण्डितजी तो इसके लिए सदा तैयार रहते थे पण्डितजी ने उसे अपने साथ रख लिया इस समय पण्डितजी बाहर गए थे ६ मार्च १९९७ को पण्डितजी आए शाम को ६ बजे पण्डितजी अपने घर के बरामदे में चारपाई पर बैठकर महर्षि के

जीवन वृत्त सम्बंधी कुछ कार्य करने लगे घातक उनकी बाई ओर कुर्सी पर बैठ गया माता जी रसोई में थी उनकी धर्म पत्नी दूसरे कमरे में पढ़ रही थी पण्डितजी ने उस घातक जो कम्बल ओढ़े था से कहा भाई देर हो गई है अब तुम आराम करो परन्तु वह निचल बैठा रहा पण्डितजी ने दोनों हाथ ऊपर कर अंगड़ाई ली पण्डितजी उस अवस्था में थे जिसकी घातक राह देख रहा था। अपने अभ्यस्थ हाथों से उसने अपनी कम्बल से छुरी पण्डितजी के पेट में इस प्रकार घुमा दी कि दस घाव अन्दर आए और अन्तर्दियाँ बाहर निकल पड़ी आर्य पथिक इस पैशाचिक आक्रमण से किन्चित भी विचलित न हुए यदि उन्होंने शारे किया होता तो लोग दौड़ पड़ते और घातक पकड़ा जाता पण्डितजी ने बायें हाथ से अन्तर्दियाँ संभाली और दायें हाथ से घातक से लड़ते भिड़ते सीढ़ी तक जा पहुँचे और उसके हाथ से छुरी छीन ली। इतने में पत्नी लक्ष्मी देवी बाहर निकल आई और धर्मवीर के ऊपर घातक के होने वाले आक्रमण से बचा लिया धर्मवीर की माताजी ने पास पड़े बेलन से उसको मारा उनको भी चोटें आई और घातक हाथ छुड़ाकर भाग गया। पण्डितजी डेढ़ बजे रात तक सचेत रहे छुरी लगने के बाद पौने दोघंटे बाद सिविल सर्जन डॉ. पैरी साहब आए और दो घंटे तक कटी आँतों को सिलते रहे उन्हें आश्चर्य था कि इतनी देर तक रक्तस्राव होने पर भी यह जीवित कैसे हैं पण्डितजी इस बीच गायत्री मंत्र तथा विश्वानिदेव मंत्र का पाठ करते रहे रात के लगभग दो बजे पण्डितजी ने इस असार संसार से विदा ली।

धर्म के मार्ग में अधर्मी से

कभी डरना नहीं

चेत कर चलना कुमार्ग में

कदम धरना नहीं ॥

शुद्ध भावों में भयानक

भावना भरना नहीं।

बोध वर्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं ॥

दे करे हमको मुनासिब राय पण्डित लेखराम तर गए जगदिश के गुण गाण पण्डित लेखराम

‘सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति के पुनरुद्धार में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का योगदान’

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

भारतीय धर्म व संस्कृति की प्राचीनतम, आदिकालीन, सर्वोत्कृष्ट, ईश्वरीय ज्ञान वेद और सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर आधारित है। सारे विश्व में यही संस्कृति महाभारत काल व उसकी कई शताब्दियों बाद तक भी प्रवृत्त रहने सहित सर्वत्र फलती-फूलती रही है। इस संस्कृति की विशेषता का प्रमुख कारण यह था कि यह ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के साथ वेदों के प्रचारक व रक्षक ईश्वर के साक्षात्कृत धर्म हमारे ऋषि मुनियों द्वारा प्रचारित व संरक्षित थी। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के प्रभाव से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा के क्षेत्र परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा शिक्षा के क्षेत्र में घोर अन्धकार छा गया। इस विषण परिस्थिति में देश-देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित में देश-देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित व्यक्तियों के कार्य होते हैं। यह अन्धकार समाप्त नहीं हो रहा था अपितु समय के साथ बढ़ रहा था। इस स्थिति में हम देखते हैं कि देश-देशान्तर में कुछ महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने समाज को नई दिशा देने के लिए सामयिक ज्ञान की अपनी योग्यतानुसार अपने-अपने मत व धर्म प्रचलित किये और इन्हीं मत व धर्मों के पालन के लिए उन-उन देशों में, वहां की भौगोलिक एवं समाज के पुरुषों की योग्यता के अनुसार संस्कृति का प्रादुर्भाव व विकास हुआ। भारत में सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत काल तक वैदिक धर्म व संस्कृति प्रचलित रही थी। समाज में अज्ञान बढ़ जाने से इसका विपरीत प्रभाव धर्म व संस्कृति दोनों पर हुआ जिस कारण संस्कृति का स्वरूप भी सत्य के विपरीत अज्ञान

प्रधान होकर अनेक विकारों से युक्त हुआ।

संस्कृति का अध्ययन करने के लिए हमें धर्म, भाषा, स्वदेश गौरव की भावना, देशभूषा, परम्परा वा रीति-रिवाजों आदि की स्थिति पर विचार और इसमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान की चर्चा करना उपयुक्त होगा। धर्म के क्षेत्र में भारत सृष्टि के आदि काल से वेद और वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का पालक रहा है। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण सत्य मान्यताओं, यथार्थ धर्म व संस्कृति के पोषक रहे हैं। हमारे ऋषि-मुनि भी विचार, चिन्तन, ध्यान व मनन द्वारा वेदों के सभी मन्त्रों व शब्दों में निहित मनुष्यों के लिए कल्याणकारी अर्थों व ज्ञान से देश की जनता को उपकृत करते थे जिससे सारा समाज व देश सत्य ज्ञान से युक्त व उन्नत था। गुरुकुलीय शिक्षा दी जाती थी जहां निर्धन व धनवानों के लिए सन्तानों को गुरुकुलीय शिक्षा दी जाती थी जहां विधन व धनवानों के लिए वेद-वेदांगों के ज्ञान कराने वाली शिक्षा का सबके लिए समान रूप से निःशुल्क प्रबन्ध था। स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने की बात कही है। कृष्ण व सुदामा एक साथ पढ़ते थे और परस्पर मित्रवत् व्यवहार करते थे। वैदिक काल के सभी आचार्य व गुरु भी वैदिक ज्ञान के प्रबुद्ध विद्वान होते थे जिनके आचार्यत्व में विद्यार्थियों से नास्तिकता का नाश होकर एक सच्चे सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता ईश्वर की उपासना देश देशान्तर में प्रचलित थी। सभी स्त्री व पुरुष स्वाध्यायशील व योगाभ्यासी होते थे जिससे सभी स्वस्थ, सुखी, अपरिग्रही व पुरुष स्वाध्यायशील व योगाभ्यासी होते थे जिससे सभी स्वस्थ,

सुखी, अपरिग्रही व सन्तोषी होते थे। समाज व देश में ऋषि-मुनियों की बड़ी संख्या होने से कहीं कोई अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न व प्रचलित नहीं होता था। शंका होने पर राजाओं के द्वारा बड़े-बड़े शास्त्रार्थों का आयोजन होता था और विजयी पक्ष के विचारों को समस्त देश को स्वीकार करना पड़ता था। दर्शनपरपेक्षा जैसा शब्द महाभारत काल तक व उसके बाद के साहित्य में भी कहीं नहीं पाया जाता। इस प्रकार सर्वत्र वैदिक धर्म का पालन होता था।

महाभारत काल के बाद मध्यकाल में अज्ञान व अन्धविश्वासों के उत्पन्न हो जाने से धर्म का सत्य स्वरूप विकृत हो गया जिससे समाज में अवतारवाद, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पाखण्ड व आडम्बर, जन्मना जातिवाद आदि मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो गये। महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) तक इन मिथ्या विश्वासों में वृद्धि होती रही। स्वामी दयानन्द जी को सन् १९३८ की शिवरात्रि को ईश्वर विषयक बोध प्राप्त हुआ। इसके कुछ काल बाद उनसे छोटी बहिन व चाचा की मृत्यु ने उनमें वैराग्य के संस्कारों को प्रबुद्ध किया। उन्होंने सत्य धर्म व संस्कृति की खोज के लिए सन् १८४६ में माता-पिता व स्वगृह का त्याग कर देश भर के धार्मिक विद्वानों, शिक्षकों व योगियों को ढूँढ कर उनकी संगति व शिष्यत्व प्राप्त किया। मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के पास वह सन् १८६० में पहुंचे और उनसे तीन वर्षों में संस्कृत के आर्ष व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य व निरुक्त संस्कृत-व्याकरण प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर समस्त वैदिक व इतर धार्मिक साहित्य के विद्वान बने। गुरु की प्रेरणा से उन्होंने संसार से मिथ्या ज्ञान नष्ट करने के साथ आर्ष ज्ञान व सत्य सनातन वैदिक मत एवं संस्कृति के प्रचार व स्थापना का कार्य किया। इस

कार्य को सम्पादित करने के लिए ही उन्होंने देश का भ्रमण कर न केवल धर्मोपदेश व शास्त्रार्थ आदि ही किये अपितु आर्यसमाज की स्थापना सहित पंचमहायज्ञविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय का प्रणयन किया और साथ ही चारों वेदों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य का अभूतपूर्व सराहनीय कार्य भी आरम्भ किया। वह यजुर्वेद का पूर्ण व ऋग्वेद का आंशिक भाष्य ही कर पाये। उनके इन कार्यों ने धर्म व संस्कृति के सुधार व उन्नति का अपूर्व कार्य किया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिख कर व उसमें देश व देशान्तर के प्रायः सभी मतों की समीक्षा कर वैदिक सनातन मत को वास्तविक व यथार्थ धर्म सिद्ध व घोषित किया। उनकी चुनौती उनके जीवनकाल व बाद में भी कोई स्वीकार नहीं कर सका जिस कारण से आज भी वेद धर्म सर्वोपरि महान व संसार के सभी लोगों के लिए आचरणीय बन गया है। महर्षि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व ईसाई व इस्लाम के अनुयायी हिन्दुओं के धर्म-परिवर्तन का आन्दोलन चलाये हे थे। बहुत बड़ी संख्या में उन्होंने सफलता भी प्राप्त की थी परन्तु स्वामी दयानन्द के कार्यों ने उनके धर्मान्तरण के कार्यपर प्रायः पूर्ण विराम लगा दिया। यदि हिन्दुओं ने उनकी वेद विषयक सत्य विचारधारा को अपना लिया होता तो आज देश का इतिहास कुछ नया व भिन्न होता। पतन को प्राप्त हो रहे वैदिक धर्म की रक्षा के लिए उनके द्वारा किया गया कार्य अपूर्व एवं महान है।

महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह वेदों की संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं की जननी मानते थे और उसके अधिकारी विद्वान व प्रचारक हुए। इसके लिए उन्होंने वेदांग प्रकाश नाम से संस्कृत व्याकरण के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। गुजराती होते हुए भी उन्होंने गुजराती के प्रति कभी पक्षपात नहीं किया। वह प्रचार आरम्भ करने के समय से ही संस्कृत में व्याख्यान देते थे जो सरल सुबोध व मुहावरेदार होती थी जिसे संस्कृत न जानने वाले लोग भी समझ लेते थे। उनके वार्तालाप की भाषा भी यही

भाषा थी। कालान्तर में उन्होंने हिन्दी भाषा को अपनाया और इसे आर्यभाषा का नाम दिया। बहुत कम समय में आपने हिन्दी सीख ली और हिन्दी में ही व्याख्यान, वार्तालाप व लेखन कार्य करने लगे। हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए आपने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे व प्रकाशित किये। आपने अपने ग्रन्थों का उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति इस कारण नहीं दी कि इससे हिन्दी का प्रचार व प्रसार पर विपरीत प्रभाव हो सकता था। इस सन्दर्भ में उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर और यहाँ का अन्न आदि खा कर यहां की सरल भाषा हिन्दी को नहीं सीख सकता उससे देश के हित के लिए और क्या उम्मीद की जा सकती है? भारत के सरकारी दफ्तरों में काम काज की भाषा तय करने के लिए अंग्रेजों ने जब एक कमीशन बनाया तो हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा स्वीकार कराने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने देश भर में एक हस्ताक्षर अभियान चलाया और उस पर करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराये। हस्ताक्षर अभियान चलाकर सरकार से अपनी बात स्वीकार कराने वाले शायद स्वामी दयानन्द भारत के प्रथम महापुरुष थे। ऐसा ही अभियान उन्होंने गोरक्षा अथवा गोहत्या बन्द कराने के लिए भी चलाया था। महर्षि दयानन्द के कार्यों से देश में हिन्दी भाषा का अपूर्व प्रचार हुआ जिसका प्रभाव उनके समकालीन व परवर्ती संस्कृत व हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा। इस विषय पर शोधार्थियों ने शोध प्रबन्ध भी प्रस्तुत किये हैं। स्वभाषा संस्कृत व हिन्दी के प्रचार व प्रसार में स्वामी दयानन्द जी का सर्वाधिक योगदान है।

मनुष्यों की देशभूषा भी किसी संस्कृति का एक आवश्यक अंग होती है। भारत में प्राचीन काल से ही पुरुषों व स्त्रियों की देशभूषा निर्धारित है। पुरुषों के लिए धोती, कुर्ता, लोई वा शाल सहित बन्द गले का कोट व जैकेट एवं सिर पर पगड़ी निर्धारित रही है। इसी प्रकार से स्त्रियों के लिए भी बचपन में फ्राक से साड़ी आदि का पहनावा प्रचलन में रहा है। भौगोलिक दूरियों के

कारण इनमें कुछ न्यूनाधिक परिवर्तन आदि भी देखने को मिलता है जिसमें एक ही मूल भावना काम करती दिखाई देती है। वेशभूषा विषयक भारतीय चिन्तन फैशन न होकर शरीर की रक्षा व सभ्यता का सूचक होता है जिससे किसी के मन में किसी प्रकार विकार आदि उत्पन्न न हो। ८वीं शताब्दी से भारत में मुगलों का आना आरम्भ हुआ और उन्होंने अपने धर्म भाषा व देशभूषा आदि थोपने में कोई कसर नहीं रखी। उसके बाद अंग्रेज आये और देश को गुलाम बनाया। उन्होंने भी अपने ईसाई धर्म, अंग्रेजी भाषा व परम्पराओं का प्रचार व प्रसार किया। हमारे देश के लोग अंग्रेजों से कुछ अधिक ही प्रभावित हो गये और आज भी इनकी ही देशभूषा का प्रचलन देश भर में देखने को मिलता है। भारतीय देशभूषा का प्रचलन कम हो रहा है और विदेशी यूरोपीय वेशभूषा का प्रचलन बढ़ रहा है। महर्षि दयानन्द ने भारतीय देशभूषा पर भी ध्यान केन्द्रित रखा। वह सदैव धोती का प्रयोग करते थे। भारतीय कुर्ते में भी उनके चित्र उपलब्ध हैं। सम्मान की निशानी सिर पर पगड़ी का भी वह प्रयोग करते थे और यदि ऊपर का उनका भाग वस्त्रहीन है, तो वह प्रायः शाल या लोई ओढ़ते थे। उनके जीवन में प्रसंग आता है कि एक बार उनका एक अनुयायी अपने पुत्र को उनके पास लाया और उसके सुधार के लिए स्वामी जी को उस युवक उपदेश देने को कहा। स्वामी जी ने देखा कि उस युवक ने विदेशी वेशभूषा पैन्ट-शर्ट पहन रखी है। इसका उल्लेख कर उन्होंने उस बालक को अपने पूर्वजों की याद दिलाई और बताया कि उनकी देशभूषा क्या व कैसी होती थी? यह भी बताया कि ज्ञान व चरित्र की दृष्टि से हमारे उन पूर्वजों की संसार में कोई समानता नहीं है। उनके विचारों का उस युवक पर प्रभाव पड़ा और उसने अपना सुधार किया। आज भी हम देखते हैं कि आर्यसमाज के अनुयायी अपने घरों में बच्चों, विशेष कर कन्याओं व स्त्रियों के भारतीय वेशभूषा के पक्षधर हैं और उनके परिवारों में इस दृष्टि से सख्त निर्देश हैं कि भारतीय वेशभूषा का ही प्रयोग हो। जहां तक अन्य

...शेष पृ. ८ पर

अग्नि होत्र पर वैज्ञानिक दृष्टि

(ले०-राज्यरत्न श्री पं० आत्मारामजी अमृतसरी)

दैनिक अग्निहोत्र के दो मूल मन्त्र प्रातःकाल और सायंकाल के निम्न प्रकार हैं :-

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः । सूर्यो बर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा । सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुपसेन्द्र वत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहाः ॥

(इति प्रातःकाल मन्त्रा)

अग्नि ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । अग्नि ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुपसेन्द्र वत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥

यजु० अ० म० ९, १०

यूरोप के अनेक संस्कृतज्ञ लिखते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों में सूर्य ही अपनी कीली पर घूमता है । यह एक महान् वैज्ञानिक तत्व है । ब्राह्मण ग्रन्थ से कहीं कहीं बढ़कर सूर्य शब्द के घातुपरक अर्थ ही स्वतः सिद्ध करते हैं कि वह गतिशील है । अतः हवन के उक्त मन्त्र सूर्य को अपनी कीली पर घूमने वाला कह रहे हैं । इस विज्ञानपरक अर्थ को हम इस प्रकार करते हैं कि प्रकाश (Light) गर्मी (Heat) विद्युत (Electricity) सब सूर्य के ही नानारूप हैं । यही तत्व उक्त मन्त्रों से हम पाते हैं । अर्थात् ज्योति (Light, Electricity, Magnetism) सूर्य स्वरूप हैं । और वर्च (Heat) वा गरमी भी उक्त सूर्य रूप हैं । यही नहीं, किन्तु सायंकाल के मन्त्रों में अग्नि (Fire) को भी यही रूप दिये हैं और यही आधुनिक विज्ञान कह रहा है मनु ने कहा है कि अखिल धर्म तथा ज्ञान का मूल वेद में है । एक आर्ष ग्रन्थ कह रहा है “अनन्तावैवेदा” अर्थात् वेद का ज्ञान Progressive असीम है । इस लिए देवयज्ञ करने वाले ब्रह्मचारी सूर्य विद्युत् तथा आग के उक्त विज्ञानयुक्त बीजों को पाकर इस विद्या की कितनी उन्नति नहीं करते थे यह विद्वान् जानते हैं । विमान शास्त्र इस समय एक जर्मन बम्बई से एक सहस्र में ले गया यह

एक प्रत्यक्ष रहस्य है । हमारा आयुर्वेद अब भी औषधिविज्ञान (Medical Science) का एक उपयोगी और सर्वमान्य ग्रन्थ भारत में रह गया है । भारतीय आर्य ऋषि विद्युत् के उपयोग को पूर्ण रूप से जानते थे । उसके कुछ दृष्टांत में नीचे दूंगा-

(१) यज्ञशालाओं और देवालयों की चोटी पर रक्षार्थ ताम्रादि त्रिशूल लगाने की प्रथा ।

(२) कभी रात को उत्तर की ओर शिर करके स्वयं तथा प्रजा को न सोने देना । उत्तरीय ध्रुव जो अग्नि वा विद्युत् का घर है जैसा कि मनसा परिक्रमा के इस वेद मन्त्र में संध्या समय सब पाठ करते हैं । “उदीची दिक् सोमो अशनि इषवः” अतः उक्त प्रकार से सोने से शिर की विद्युत् कम हो जाती है । आर्य जाति के लोग मृतक शरीर को ही उत्तर दिशा में रखते हैं जिससे शिर के विद्युत् को वह दिशा खींच ले । इसी लिये पूर्व वा पश्चिम दिशा को शिर करके ही हिंदू मात्र सोता है ।

(३) सोने, चांदी, लोहे की खाटों पर सोने का हमारे यहां निषेध है, क्योंकि ऐसी खाटें वा कुरसियां मानव शरीर की विद्युत् को भूमि में खींचकर शरीर को निर्बल कर देंगी । इस लिए पूजा पाठ के समय काष्ठ के आसनों (चौकियों), ऊन के आसनों तथा तृण के आसनों, चटाई या दुशासनों का विधान है अर्थात् उक्त कुश, काष्ठ था ऊन के आसन विद्युत् दुर्वाहक (Non-conductor of Electricity) होने के कारण विज्ञानसिद्ध पदार्थ हैं ।

(४) रजस्वला, प्रसूता तथा रोगी मनुष्य को इसी लिए सदा कम्बल वा मुंज आदि की बुनी लकड़ी की खाटों को देते थे ।

उक्त बातों से सिद्ध है कि वैदिक आर्य ऋषि विद्युत् के अनेक प्रकार के उपयोगों को जानते और विमान आदि में उसका प्रयोग भी करते थे जैसा कि संस्कृत के अनेक ग्रन्थों तथा वेदों के मन्त्रों से प्रत्येक विद्वान् जान सकता है । परन्तु उन्होंने ग्रामों

वा नगरों में विद्युत् दीप के प्रयोग की प्रथा को क्यों चालू नहीं किया, इस प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है ।

घरों, ग्रामों तथा नगरों में प्रायः नाना प्रकार के तेलों के दीपकों (Oil lamps) का उपयोग अनेक हेतुओं से वे करते थे । और मुख्य हेतु यह है कि वह सबसे सस्ते तथा स्वास्थ्यप्रद हैं । सरसों का तेल जहां जलता है वहां सांप नहीं आ सकता । उसका धूम्र काजल का काम देता है । कदाचित् ५२ वर्ष पूर्व मुझे जब कि मैं अमृतसर के सरकारी हाई स्कूल का एक विद्यार्थी था, मोहम्मडिन कालेज अलीगढ़ के जन्मदाता नामी मुसलमान सुधारक माननीय श्रीयुत सर सैयद अहमद साहब का एक उर्दू भाषण अमृतसर के सरकारी भवन (Principle hall) में सुने का अवसर मिला था । उसमें आपने बतलाया था कि उक्त भावी मुसलिम कालेज तथा विश्वविद्यालय (University) अलीगढ़ का हिंदू के मुसलिम तथा हिन्दू छात्रों को एक साथ शिक्षण देकर उक्त दोनों जातियों में प्रेम और संगठन के सञ्चार का प्रबल साधन ही नहीं बनेगा, किन्तु हिन्दुस्तान में एक जातीयता (Nation) बनाना इसका मुख्य कर्तव्य होगा । इसलिये हिन्दू तथा मुसलमान दानवीर दिल खोल कर मेरी झोली भर दें । इसके पीछे १८८६ के सन् में लाहौर के अमर तथा नामी दयानन्द हाईस्कूल की नींव डाली गई और शायद इसके दो वर्ष पीछे लाहौर के नामी दयानन्द एङ्ग्लो वैदिक कालेज का जन्म हुआ, जिसके मुख्य संचालक मेरी दृष्टि में तीन महापुरुष थे । त्यागवीर महात्मा हंसराज जी, ज्ञानवीर स्वर्गीय पंडित गुरुदत्त जी एम० ए० और दानवीर स्वर्गीय मलिक ज्वालासहाय जी । उक्त कालेज ने जो हिंदू (आर्य) जाति को लगाने का महान् काम किया है वह इस प्रकार है :-

(१) सरकारी, ईसाई मिशन के कालेज तथा अलीगढ़ के नामी मुसलिम कालेज के

पीछे एक उत्तम संस्था हिंदू जाति के लिये बनाकर यह सिद्ध कर दिया कि हिंदू जाति मुर्दा नहीं। वह भी मुसलमानों के कालेज के मानिन्द अपने जाति के शिक्षण में पीछे नहीं।

(२) उक्त दयानन्द कालेज ने पंजाब में सरकारी कालिजों की तुलना में फ्रीस की दर कम करके निर्धन हिंदू बालकों को शिक्षण देकर भारी लाभ पहुँचाया।

(३) उसके आय व्यय के उत्तम प्रबन्ध तथा संचालन का ठोस प्रबन्ध करके सिद्ध कर दिया कि हिंदू जाति इस अंशमें सरकारी मिशन, तथा मुस्लिमों के शिक्षा-सम्बन्धी सुप्रबन्ध में से कम नहीं।

(४) संस्कृत भाषा को उचित महत्व दिया और जहां तक छात्र यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं को पढ़ सकते थे, पढ़ाया।

(५) हिंदी भाषा तथा नागरी लिपि के प्रचार में भारी तथा युग प्रवर्तक सेवा की।

शायद चार साल हुए, कलकत्ता के नामी मासिक मार्डन रिव्यू में अमरीका के नामी पादरी भारतहितैषी श्रीयुत पादरी सदरलैंड साहब का अग्र लेख छपा था, जिसमें उन्होंने बतलाया था कि भारतीय स्वराज्य के इसलिए भी योग्य हैं कि उन्होंने पूना में फ्रगुसन कालेज लाहौर में दयानन्द कालेज और हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी तीन उत्तम संस्थाएँ अपने सुप्रबन्ध से चला रखी हैं। इसके पीछे हिंदू जातिके महान् उद्धारक महामना माननीय श्रीयुत मालवीय जी का वर्णन करना जरूरी है, जिन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय आर्य संस्कृति के प्रचार के लिए संस्कृत भाषा का उपयोग हिन्दू जाति के उद्धार सुधार तथा संगठन के लिए सिद्ध कर दिया है।

हिन्दू जाति का नामी खालसा कालेज भी देश और जाति की भारी उपयोगी सेवा कर रहे हैं। बंगाल का नामी 'शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय' आर्य संस्कृति के उपनिषद् विभाग का परम उत्तम गौरव योरोप आदि के विद्वानों तक प्रचार करने में सफल हो रहा है। इन सब विद्या संस्थाओं के होने पर महर्षि मनुजी ने प्रथम आश्रमी ब्रह्मचारी के जो दे मुख्य यज्ञ करने धर्म वा कर्तव्य कहे हैं। उनके संबन्ध में हमारा यह लेख है।

प्रोफ़ेसर मैक्समूलर ने वर्तमान शताब्दी

की भारी परिशोध (Discovery) आर्य जाति को वेद बतलाया है। पर वेद का स्वरूप तथा अर्थ करने की प्रामाणिक प्राचीन शैली वह नहीं बतला सके। वृन्दावन के निकट मथुरा निवासी बालब्रह्मचारी वेदज्ञ सत्यव्रती दण्डी श्रीस्वामी ब्रजानन्द जी महाराज को वह तालिका मिली और उनसे उनके साथ योग्य शिष्य महर्षि दयानन्द जी से लेकर वेदों के शब्द यौगिक, अर्थ बुद्धि पूर्वक और वेदांग उपांग ग्रन्थ एक मात्र उनके भाष्य करने में अनिवार्य सहायक हैं इन नियमों पर चलकर अपना भाष्य रच कर वेद सत्य विद्याओं का भण्डार **Encyclopedia** हैं सिद्ध करते हुए उनको मनु के शब्दों में परम प्रमाण अर्थात् स्वतः प्रमाण सिद्ध कर दिया। जिन चार ऋषियों पर इनका प्रकाश हुआ वह यहां तर्क **Reason** के पूर्ण धनी थे, साथ ही मेधायोग दृष्टि **Intuition** के भी परम धनी थे। आर्य ग्रंथों के आधारवेदादि सत्य शास्त्र दस वर्ष पीछे नहीं बदलने वाले विश्व विद्याकोष **Eternal Encyclopedia** हैं। विज्ञानाचार्य श्री जगदीशचन्द्र जी बोस का भी यही मत है कि योगी ऋषियों के लेख सनातन सत्य का अटल रूप धारण करते हैं।

जब निरुक्त नहीं बना था उस समय भी वेद के जो अर्थ किए जाते थे वह महर्षि मनु के शब्दों में 'यस्तर्केणानु संधते सधर्म वेद नेतरः' तर्क पूर्वक किए जाते थे और मनु जी के शब्दों में वेद के शब्द अथवा अर्थ सृष्टि के पदार्थों तथा नियमों में पाने थे। मनुजी कहते हैं कि आदि काल में सृष्टि के पदार्थों के नाम तथा उनके ज्ञान ईश्वर की प्रेरणा ने वेद के शब्दों द्वारा दिए। अतः आज वृन्दावन आदि सब गुरुकुल इस युग में मानव जाति के भारी सर्वस्व वेद के अर्थ जो एक मात्र सत्य हैं, ब्रह्मयज्ञ के रूप में अंग उपांगों द्वारा भूलोक में दर्शने के व्रत को चरितार्थ करने के लिए ही स्थापित हैं।

इन गुरुकुलों के सब ब्रह्मचारी मनुजी के कथनानुसार ब्रह्मयज्ञ रूपी वेद का स्वाध्याय कर रहे हैं, वह मानव जीवन के सुधार की नींव डाल रहे हैं।

सभी संस्थाओं से तुलना की बात है, आर्यसमाज पहले भी और आज भी भारतीय वेशभूषा का सबसे बड़ा समर्थक व पक्षधर है। आज भी हमारे युवक व युवतियों के गुरुकुलों व शिक्षण संस्थाओं में भारतीय वेशभूषा का ही प्रचलन व प्रभाव में सम्मिलित स्वीकार नहीं किया जा सकता।

किसी मनुष्य जाति व धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी परम्परायें व रीति-रिवाज भी होते हैं जो कि उनकी संस्कृति का अंग कहलाते हैं। भारतीय धर्म व संस्कृति की बात करें तो यहां भी अनेकानेक अनावश्यक का त्याग तथा भूली हुई आवश्यक परम्पराओं का पुनः प्रचलन स्वामी दयानन्द जी व आर्यसमाज ने किया है। स्वामी दयानन्द ने समस्त वैदिक परम्पराओं को पंच महायज्ञों व १६ वैदिक संस्कारों में ढालने सहित भारत में मनाये जाने वाले मुख्य पर्वों होली, दीपावली, शिवरात्रि आदि पर्वों को वैदिक विधि से मनाये जाने का शुभारम्भ किया। वैदिक परम्पराओं में प्रातः व सायं ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, माता-पिता-आचार्य-वृद्धों आदि का सम्मान, पशु-पक्षी-कीट-पतंगों आदि को अन्न व भोजन कराना तथा अतिथियों का सत्कार करने सहित गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त १६ संस्कारों को प्रचलित किया। आर्यसमाज अविद्या का नाश व विद्या की ज्ञान की पुस्तकों को नियमित रूप से पढ़ने व पढ़ाने को जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। आर्यसमाज वेदादि सभी लाभकारी ग्रन्थों के नियमित सवाध्याय का प्रबल समर्थक है। वैदिक संस्कृति में अच्छी परम्पराओं का प्रचलन व अनावश्यक एवं बुरी प्रथाओं के नियंत्रण का आर्यसमाज समर्थक है। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुमूल्य योगदान दिया है। आर्यसमाज की प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त सत्य मान्यताओं व तर्कों पर आधारित हैं जिनसे समाज लाभान्वित होता है। इसी कारण सभी लोग आधारित हैं जिनसे समाज लाभान्वित होता है। इसी कारण सभी लोग अपनी अपनी ज्ञान की योग्यता के अनुसार इसे पसन्द करते व अपनाते हैं। यही कारण है कि आर्यसमाज भारत तक ही सीमित न होकर एक विश्वव्यापी

माता और लाला के बीच बात

डॉ. रघु शिरोडकर

[illegible]

लेखक ने आरक्षण और प्रेम विवाह के सम्बंध में विवरण पूर्वक लेख न लिखाकर केवल भावना व्यक्त की है। भारतीय इतिहास में प्रेम विवाहों के कई प्रसिद्ध उदाहरण मिलते हैं। उसकी उपेक्षा कर केवल भावना व्यक्त कर देने से समस्या का समाधान या विकल्प नहीं निकाला जा सकता। इसी प्रकार जातिवाद को बरकरार रखते हुए या समाज में जाति व्यवस्था के चलते हुए आरक्षण के मुद्दे पर भी कोई सटिक जवाब नहीं निकाला जा सकता। लेखक अपनी जगह विद्वान होते हुए भी इन विषयों पर समग्र रूप से चिंतन मनन नहीं किया। हम अनुरोध करते हैं कि इन मुद्दों पर गहनतम मंथन करके लेख लिखें।
प्रो० विठ्ठल राव
आर्य संपादक

सुरसा की तरह पसरता बोतलबंद पानी का बेलगाम धंधा

-डॉ. विनोद बब्बर

हवा, पानी ईश्वर की ओर से प्राणी जगत को वरदान कहे जाते थे। कहा तो यहां तक जाता था कि जिस वस्तु की जितनी आवश्यकता तीव्र है उसका दाम उतना ही कम है। जैसे हवा बिल्कुल मुफ्त क्योंकि उसके बिना एक क्षण भी नहीं रहा जा सकता। पानी भी नाम मात्र के दाम पर क्योंकि उसके बिना कुछ घंटे भी रहना सम्भव नहीं। भोजन तथा अन्य चीजें उससे महंगी। मांग की तीव्रता ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है दाम भी बढ़ने लगते हैं। परन्तु लगता है कि पानी के मामले में यह सिद्धान्त नकारा हो रहा है। दुःखद आश्चर्य तो यह है कि जिस देश में प्याऊ लगाने की सदियों से परम्परा रही हो वहां पानी की तथाकथित शुद्धता के नाम पर करोड़ों अरबों का वारा-न्यारा करने वाला एक तंत्र सक्रिय होना किसी को अपराधबोध तो दूर असंतुष्ट नहीं करता है।

एक महापुरुष द्वारा पानी के लिए विश्वयुद्ध होने की भविष्यवाणी तो सुनी थी लेकिन गर्मी शुरू होते ही महत्त्वपूर्ण स्थानों पर पानी की रेहड़ी लगाने के लिए पानी कम्पनियों को हर तरह के हथकंडे अपनाते देख आश्चर्य हुआ। लगा जैसा मामूली सी बात पर विवाद करना समझदारी नहीं है लेकिन जब असलियत सामने आई तो पानी-पानी होने के अतिरिक्त कुछ बचा ही कहाँ ? पानी का 'धंधा' करने वाले भूजल को चलताऊ तरीके से छानकर बोतलों, जारों में पैक करते हैं। फिल्टर पानी को हल्का नीला करने के लिए उसमें कैमिकल तक मिलाये जाते हैं।

रेहड़ी वाले ही क्यों, देशभर में बोतलबंद पानी के नाम पर मनमानी हो रही है। आज देश में बोतलबंद पानी का व्यापार करने वाली हजारों कम्पनियाँ हैं। पानी के पाउच वाली छोटी कम्पनियों की तो कोई अधिकृत संख्या ही नहीं है। करोड़ों, अरबों रुपये का व्यवसाय बन चुका यह धंधा सुरसा की तरह फैल रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि महंगा और कीटाणुनाशक होने के दावे के कारण बोतलबंद पानी को स्वास्थ्य के लिए बेहतर बताया जाता है जबकि अनेक अध्ययनों ने इन दावों को खोखला साबित किया है। साफ और शुद्ध के अंतर को समझने वाला कोई नहीं। पानी साफ वेशक हो परन्तु बोतल भी प्रदूषित हो सकती है। बोतल के सील होने के बाद यह विकने से पहले महीनों स्टोर में पड़ा हो सकता है। इसके अतिरिक्त बोतल को खोलने के बाद इसे कुछ ही घंटों में निपटाना जरूरी है। यह भी

सर्वविदित है कि पानी को शुद्ध करने वाली मशीनों और पद्धतियों की भी सीमा है। ये कीटनाशकों को पानी से निकालने में लगभग अक्षम है।

विश्व में सर्वप्रथम बोतलबंद पानी की शुरुआत 'पोलैंड स्प्रिंग बॉटल्ड वाटर' ने १८४५ में की तो मुम्बई भारत में १९६५ में इटली के सिंगोर फेलिस की बिसलरी ने यह सिलसिला शुरू किया। आज भी भारत के बोतलबंद के आधे से अधिक व्यापार पर बिसलरी का कब्जा है। वास्तव में नदियों और भूजल में औद्योगिक कचरों के प्रवेश ने जल प्रदूषण को बढ़ाया है तो इस समस्या का समाधान करने की बजाय दिखावा और शोर करने से लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंता बढ़ी। शांतिर लोगों ने इसका भयावहोहन करते हे जन-मन में यह बात बैठाने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की कि अगर स्वस्थ रहना हो तो बोतलबंद पानी का इस्तेमाल करो। अंधाधुंध प्रचार और विज्ञापनों ने साधन सम्पन्न लोगों को बोतलबंद पानी की ओर धकेला। मध्यम वर्ग भी इसी रास्ते पर बढ़ता गया। पानी के लिए 'पानी की तरह' पैसा बहने लगा। इतना होने पर भी जनसंख्या का एक छोटा सा वर्ग ही बोतलबंद पानी तक अपनी पहुंच बना सका है। यदि इतनी ऊर्जा और संसाधन नदियों को साफ करने के नाम पर लगाई जाती तो सभी को शुद्ध जल मिल सकता था। परन्तु ऐसा लगता है कि तत्कालीन सरकारों ने अपनी इस नैतिक जिम्मेवारी से पल्ला झाड़ते हुए इस बुनियादी जरूरत को बाजारवाद के हवाले कर दिया। यहाँ तक कि खुद सरकार भी (रेल नीर, दिल्ली जल बोर्ड के वाटर एटीएम इसके उदाहरण हैं) पानी के धंधे में उतर गई। मुफ्त पानी का ढोल पीटने वाले भी इसी राह पर हैं।

'नेचुरल रिसोर्सेज डिफेंस काउंसिल' का अध्ययन है कि बतलबंद पानी और साधारण पानी लगभग समान है। मिनरल वाटर के नाम पर बेचे जाने वाले बोतलबंद पानी के बोतलों को बनाने के दौरान एक खास रसायन पैथलेट्स का इस्तेमाल किया जाता है जो बोतलों को मुलायम बनाता है। यही रसायन सौंदर्य प्रसाधनों, इत्र, खिलौनों आदि के निर्माण में भी प्रयुक्त होता है। सामान्य से थोड़ा अधिक तापमान होते ही यह रसायन पानी में घुलने लगते हैं जो हमारे शरीर में जाकर अनेक प्रकार के दुष्प्रभाव दिखाते हैं। एंटीमनी नाम के रसायन से बनी बोतल में बंद पानी जितना पुराना होता जाता है उसमें एंटीमनी

की मात्रा बढ़ने से उसका उपयोग करने वाले को जी मचलना, उल्टी और डायरिया की शिकायत हो सकती है। स्पष्ट है कि हमारे मिट्टी के घड़े और सुराही के मुकाबले में बोतलबंद पानी कहीं नहीं ठहरता। इसकी बढ़ती मांग शुद्धता और स्वच्छता से अधिक एक फैशन और 'स्टेटस सिंबल' बनती जा रही है।

बोतलबंद पानी की प्रथा ही अपने आपमें नुकसानदायक है। प्रतिदिन लाखों बोतले इस्तेमाल के बाद कचरे बनकर पर्यावरण के लिए संकट बढ़ा रही है तो अनेक स्थानों पर इनकी अच्छी तरह से सफाई किये बिना इन्हें फिर से भरने के समाचार भी हैं। भारत तो फिलहाल इस खतरे से आंखें मूंदे बैठा है लेकिन सैन फ्रांसिस्को में बोतलबंद पानी की बिक्री रोक दी गई है। सॉल्ट लेक सिटी तो पहले ही ऐसा कर चुकी है। 'प्रकृति द्वारा प्रदत्त जल जीवन के लिए अत्यावश्यक है। इसका बाजारीकरण नहीं होना चाहिए' विषय पर महीने चली बहस के बाद यह निर्णय हुआ कि नागरिक अपनी बोतल साथ रखे। उन्हें उचित स्थानों पर शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की जिम्मेवारी सरकार की होगी। क्या यह व्यवस्था भारत में नहीं हो सकती ? आरम्भ में रेलवे स्टेशनों पर बोतलबंद पानी की बिक्री पर रोक लगाकर एकाधिक फिल्टर लगाये जा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस पर होने वाला खर्च बोतलबंद वाले पानी पर होने वाले खर्च की तुलना में काफी कम होगा। प्लास्टिक के कचरे से मुक्ति मिलेगी सो अलग। यदि सरकार इस जिम्मेवारी से बचना चाहती हो तो आरम्भ में शुद्ध, शीतल जल की ऐसी मशीनें लगाई जा सकती हैं जो एक रुपये का सिक्का डालने पर एक बोतल पानी जारी करे।

आश्चर्य है कि हम मुफ्त पानी के वादे पर आँख बन्द करके लगभग एक तरफा फैसला सुनाते हैं लेकिन बोतलबंद पानी के लिए १५ से बीस रुपये चुकाते समय एक क्षण के लिए सोचते तक नहीं। क्या कभी किसी ने भारत में बोतलबंद पानी की मनमानी कीमत के विरोध में जन आंदोलन का समाचार सुना है ? शायद नहीं। स्पष्ट है कि अन्य वस्तुओं के मूल्यों में मामूली वृद्धि तो हमें वेशक आंदोलित करती हो परन्तु बोतलबंद पानी के अनियंत्रित दाम से हमें कोई शिकायत नहीं है।

नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार

शिक्षा के क्षेत्र में शान्ति के सूत्रधार महात्मा हंसराज

• वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक

ऋषि दयानन्द ने जहाँ सामाजिक, धार्मिक और वैदिक आदि अनेक क्षेत्रों में आमूलचूल क्रान्तिकारी सूत्रपात किया वहाँ शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की शिक्षण विधि अपने कालजयी अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि में लिखी। ऋषि दयानन्द की शिक्षण पद्धति के दो मुख्य आधार थे, एक भारतीय ज्ञान विज्ञान का पुनरुद्धार करने के लिए वेद और ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन और दूसरे विद्यार्थी का चरित्र निर्माण। किन्तु इस आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ ऋषि ने यह भी लिखा कि आधुनिक विदेशी भाषाओं का अध्ययन और आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययन से भी विद्यार्थी वञ्चित नहीं रहना चाहिए। यही ऋषि दयानन्द की आर्ष शिक्षा प्रणाली या गुरुकुल प्रणाली थी। ऋषि ने आधुनिक तकनीक और विज्ञान के अध्ययन के लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा को जर्मनी भेजा।

ऋषि दयानन्द की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रचलन तो ऋषि के निर्वाण के बीसियों वर्ष बाद महात्मा मुंशी राम (स्वामी श्रद्धानन्द) कर पाए, किन्तु ऋषि के जाने के तुरन्त बाद लाला हंसराज (बाद में महात्मा हंसराज) ने शिक्षा के क्षेत्र में ऋषि दयानन्द की शिक्षा प्रणाली के मुख्य आधारों को लेकर क्रान्ति लाने के लिए कसर कसी।

पंजाब (विभाजन से बहुत पहले) में उस समय ऋषि दयानन्द के भक्तों में तीन नाम प्रमुख थे, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला (महात्मा) हंसराज और लाला लाजपत राय। पं. गुरुदत्त ऋषि के अंतिम दर्शन करने अजमेर भी गए थे जब ऋषि मृत्यु शैया पर थे। अक्टूबर सन् 1883 में ऋषि के निर्वाण के बाद इन तीनों महापुरुषों ने शिक्षा के क्षेत्र में ऋषि के स्वप्न को मूर्तरूप देने की प्रतिज्ञा कर ली जिसके नेता महात्मा हंसराज जी थे। महात्मा हंसराज और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने मिल कर योजना बनाई कि ऋषि की शिक्षण पद्धति को मूर्तरूप देने के लिए शिक्षा का प्रारूप क्या होना चाहिए। इसके लिए इन्होंने ऋषि की शिक्षा प्रणाली के मुख्य बिंदुओं को समाहित करने की सोची और इस समस्या का अन्तिम समाधान

निकल आया जिसके वही तीन मुख्य आधारभूत बिन्दु थे— 1. विद्यार्थी का चरित्र निर्माण 2. आधुनिक भाषा तथा ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, 3. वेद और प्राचीन भारतीय ऋषियों के ग्रन्थों का ज्ञान। इसी शिक्षा पद्धति का नाम दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक (डी.ए.वी.) शिक्षा प्रणाली रखा गया, जिसके अन्तर्गत आज देश और विदेश में हजारों विद्यालय और महाविद्यालय चल रहे हैं, और अब एक विश्वविद्यालय भी डी.ए.वी. संस्था का बन गया है।

इस डी.ए.वी. शिक्षण पद्धति के मुख्य आधार बिंदु और रूपरेखा तैयार होते ही महात्मा हंसराज जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला लाजपतराय तथा दूसरे अन्य साथियों को भी साथ लेकर धनसंग्रह में जुट पड़े क्योंकि संस्था चलाने के लिए धन की सब से पहले आवश्यकता पड़ती है।

वस्तुतः डी.ए.वी. संस्था महर्षि दयानन्द का स्मारक स्थापित करने का परिणाम स्वरूप था। 6 नवम्बर सन् 1883 को महर्षि के निर्वाण के एक सप्ताह बाद आर्य समाज लाहौर की अंतरंग सभा की बैठक हुई जिसमें दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना करने का निश्चय किया गया। पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार द्वारा लिखित “आर्य समाज का इतिहास” के अनुसार पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने डी.ए.वी. स्कूल और कालिज के रूप में ऋषि दयानन्द का स्मारक बनाने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। 31 जनवरी 1886 के दिन आर्य समाज लाहौर में प्रतिनिधियों की मीटिंग में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालिज ट्रस्ट एण्ड मैनेजिंग सोसाइटी का भी विधिवत् गठन किया गया।

डी.ए.वी. स्कूल और कालिज के लिए धन संग्रह किया गया। हंसराज जी ने भी दान के रूप में अपनी आहुति डालनी चाही। हंसराज जी ने सोचा कि धन का दान तो सभी दे रहे हैं, मैं कुछ ऐसा दान करूँ जो अद्वितीय दान हो, जिसे और कोई न कर रहा हो। बस यही अवसर हंसराज जी को महात्मा बनाने का था। हंसराज जी ने अपना जीवनदान करने

शिक्षा के क्षेत्र में शांति के सूत्रधार महात्मा हंसराज

• वेदभार्तण्ड जी, महावीर भीमांसक

की ठान ली। इस संबंध में उन्होंने अपने बड़े भाई मुखरराज जी से सलाह ली। उन्होंने कहा कि शुभ काम में देर क्या (भय)। “तुम डी.ए.वी. के लिए अपना जीवन दान दो, मैं तुम्हारे परिवार के लिए अपनी कमाई का आधा हिस्सा दूँगा”। हंसराज की ओर से आर्य समाज लाहौर के प्रधान को पत्र भी बड़े भाई मुखरराज ने ही लिख दिया, हंसराज जी ने अपने हस्ताक्षर इस पत्र पर कर दिए। पत्र में लिखा था “दयानन्द स्कूल खुलने पर मैं अवैतनिक हैड मास्टर बनने के लिए तैयार हूँ।” हंसराज उसी दिन से महात्मा हंसराज कहलाने लगे।

24 अप्रैल सन् 1886 के दिन सोसाइटी की एक बैठक हुई और 1 जून सन् 1886 का दिन डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना के लिए निश्चित किया गया। निश्चय के अनुसार 1 जून सन् 1886 मंगलवार के दिन आर्य समाज मन्दिर गली बिच्छेवाली में एक सार्वजनिक सभा करके डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना कर दी गई जिसके अवैतनिक हैड मास्टर महात्मा हंसराज थे। डी.ए.वी. स्कूल का यह सबसे अधिक सौभाग्य था कि जिसे महात्मा हंसराज जी जैसे अवैतनिक हैडमास्टर मिले, जिनके निर्देशन में डी.ए.वी. एक स्कूल से फलती-फूलती हुई आज एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का महत्वपूर्ण स्थान ले चुकी है। स्कूल के सैकण्ड मास्टर दुर्गाप्रसाद जी नियुक्त हुए तथा 9 और अध्यापक रखे गए। इस प्रकार अवैतनिक हैडमास्टर महात्मा हंसराज सहित ग्यारह अध्यापकों की टीम ने स्कूल के बच्चों के जीवन निर्माण का कार्य संभाला। स्कूल पूर्व और पश्चिम के समन्वय का संगम था।

महात्मा हंसराज जी के अवैतनिक हैडमास्टर होने की ख्याति चंदन की सुगंध की भाँति एकदम चारों तरफ फैल गई। माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलवाने के लिए बड़े उत्सुक हो गये। पहले सप्ताह में ही छात्रों की संख्या तीन सौ से भी अधिक पहुँच गई। छात्रों की संख्या एक मास में ही 550 तक पहुँच गई। बड़ी कक्षाओं में विद्यार्थी ऐसे स्कूलों से आए जिन में हिन्दी की पढ़ाई का प्रबंध नहीं था। प्राइमरी कक्षाओं में

शिक्षा का माध्यम केवल हिन्दी था और संस्कृत अनिवार्य विषय था।

महात्मा हंसराज जी की निस्वार्थ सेवा भावना, उनका त्याग, उनकी अहर्निश कर्तव्यपरायणता, उनके निर्देशन में उनकी समस्त अध्यापकों की टीम और अन्य कर्मचारियों की सेवापरायणता और छात्रों का अनुशासन का पालन करते हुए अध्ययनमुखी वृत्ति का एक ही वर्ष में वह आश्चर्यजनक परिणाम निकला कि डी.ए.वी. स्कूल की दसवीं कक्षा का परीक्षाफल सन् 1888 में समूचे पंजाब प्राप्त में सर्वोत्तम रहा। इस अद्भुत सफलता को देखकर जनता ने स्कूल को कॉलेज बनाने की मांग की। परिणामस्वरूप कालिज खोलने का निर्णय प्रबंध कमेटी का हो गया और कॉलेज की प्रथमवर्षीय कक्षा सन् 1889 में चालू कर दी गई। पंजाब विश्वविद्यालय की सिडीकैट ने भी 18 मई 1889 को प्रस्ताव पास करके कॉलेज (डी.ए.वी.) को मान्यता प्रदान कर दी।

महात्मा हंसराज की यह ऋषिभक्त विलक्षण बुद्धि थी कि उन्होंने शिक्षा की पारचात्य आधुनिक धारा को बड़ी सफलतापूर्वक पूर्वात्य प्राचीन धारा में समाहित करके ऋषि दयानन्द के स्वप्न को साकार क्रियात्मक रूप दिया जिससे देश का भावी नागरिक शिक्षा प्राप्त करके वैदिक संस्कृति, आत्मा और आचार-विचार से शुद्ध भारतीय बना रहे और तकनीक, विज्ञान तथा आधुनिक जीवन के क्षेत्र में भी वह औरो से आगे रहे। ऋषि दयानन्द के अनुसार यही शिक्षा का दर्शन महात्मा हंसराज का था।

ऋषि दयानन्द के स्मारक के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में जिन आदर्शपूर्ण उद्देश्यों को लेकर महात्मा हंसराज ने जो क्रान्ति का सूत्रपात किया, आज के डी.ए.वी. संस्था के अधिकारियों को उन्हें अक्षुण्ण रखते हुए आगे प्रगति पथ पर बढ़ाते रहना चाहिए, ताकि देश के भावी नागरिक चरित्रवान बनें और ऋषियों के ज्ञान से अनुप्राणित होकर आधुनिक तकनीक और विज्ञान में भी किसी से पीछे न रहें।

ए-3/11, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

मो. 9811960540

हंस हंस कर हंसराज ने तन मन व धन
लुटा दिया,
धन्य है तुझको ए ऋषि तूने हमें जगा
दिया।।

यह गीत हैदराबाद सत्याग्रह के सफल होने पर आर्य जनता के द्वारा पूरे उत्साह के साथ गाया जाता रहा है। महर्षि दयानन्द का बलिदान 30 अक्टूबर 1883 को अजमेर में हुआ। ऋषि के जीवन के अन्तिम समय में पंजाब से ऋषि की सेवा में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा लाला जीवन दास गये थे। उस अन्तिम दृश्य को गुरुदत्त विद्यार्थी ने देखा और उस दृश्य को देख कर ही नास्तिक गुरुदत्त एक आस्तिक गुरुदत्त बन गये। लाहौर (पंजाब) पहुँच कर 8 नवम्बर 1883 को गुरुदत्त विद्यार्थी ने शोक सभा में ऋषि दयानन्द की स्मृति में ऋषि का एक स्मारक बनाने की योजना प्रस्तुत की, वह स्मारक कोई ईंट व पत्थरों का नहीं अपितु एक शिक्षण संस्था बनायी जाय जिससे निकलने वाला प्रत्येक विद्यार्थी ऋषि दयानन्द का स्मरण करा सके और उस शिक्षण संस्था का नाम "दयानन्द ऐंग्लो वैदिक पाठशाला" रखा जाय। इसके लिये आर्थिक सहयोग की अपील की गई! लगभग 6 हजार रुपये एकत्रित हुए। माताओं बहिनों ने अपने आभूषण भी दिये। 31 जुलाई 1885 को यह राशि ग्यारह हजार तक पहुँच गयी।

शिक्षण संस्था के लिये धन तो एकत्रित हो गया किन्तु कोई शिक्षण संस्था केवल धन से ही नहीं चल पाती। जब तक उसके लिये अपना जीवन लगाने वाला कोई न हो तब तक सफलता नहीं मिल सकती। यही चिन्ता उस समय आयी को थी, इस चिन्ता को दूर करते हुए उस समय पंजाब विश्वविद्यालय में बी.ए. में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले 22 वर्षीय लाला हंसराज ने 31-11-1885 को ऋषि के इस स्मारक (दयानन्द ऐंग्लो वैदिक पाठशाला) के लिये अपना जीवन समर्पित करने की घोषणा कर दी। लाला हंसराज की इस घोषणा से आर्य जनता में उत्साह का वातावरण बन गया, सभी ने इसका स्वागत किया। लाला हंसराज का पारिवारिक जीवन का निर्वाह कैसे होगा, इसके लिये इनके बड़े भाई लाला मुल्कराज ने भी घोषणा कर दी कि जितना वेतन मुझे मिलता है (उस समय उन्हें 80 रुपये मासिक मिलता था) उसको आधे वेतन में मैं अपने परिवार का निर्वाह करूँगा और आधा वेतन (अर्थात् 40 रुपये महीना लाला हंसराज अपने छोटे भाई) को उसके पारिवारिक जीवन

के निर्वाह हेतु आजीवन देता रहूँगा। लाला मुल्कराज के इस अद्भुत त्याग के लिए आर्यजगत् सदा उनका ऋणी रहेगा। इसी त्याग के फल स्वरूप विना वेतन लिये लाला हंसराज जीवन भर कार्य करते रहे। जो विना इस पुनीत सहयोग के संभव नहीं था। लाला हंसराज के जीवन समर्पण के फलस्वरूप एक जून 1886 दयानन्द ऐंग्लो वैदिक पाठशाला प्रारम्भ हुई जो आगे चलकर माध्यमिक विद्यालय उच्च माध्यमिक विद्यालय और महाविद्यालय के रूप में विकसित हुई। यह संस्था डी.ए. वी. आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुई तथा पूरे उत्तर भारत में डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं की स्थापना हो गयी, अब तो भारत और

मुल्तान में जब 'प्लेग' की हंसराज ने सेवाकार्य के लिये को छोड़कर पारिवारिक जन बाजवाडिया ने रोगियों की सेवा जिसको देखकर पादरी स्टोक आवश्यकता यहाँ नहीं रही है'। हंसराज के जीवन से प्रभावित को छोड़कर वैदिक धर्मी 'र

भारत के बाहर भी इनकी स्थापना हो रही है। इस आन्दोलन के सफलता में लाला हंसराज का महत्वपूर्ण योगदान है। लाला हंसराज के तप-त्याग और समर्पण ने ही उन्हें लाला से महात्मा बना दिया और सन् 1890 से उनके नाम से पहले महात्मा शब्द का प्रयोग होने लगा। (आर्य गज़ट 1 अगस्त 1890) और वे महात्मा हंसराज के नाम से विख्यात हो गये।

अर्थ शुचिता के धनी

महात्मा हंसराज ने आजीवन अर्थ शुचिता का सदा ध्यान रखा, जिसका प्रभाव आर्य समाज से इतर दूसरे समुदाय के लोगों पर भी बहुत रहा है। सन् 1905 में कांगड़ा में भूकम्प आया, उस सेवा कार्य के लिये अन्य संस्थाओं के साथ आर्य समाज द्वारा भी महात्मा हंसराज के नेतृत्व में सेवा कार्य चल रहा था, भारत के विविध नगरों से सेवा कार्य हेतु आर्थिक सहयोग भेजा जा रहा था। आर्यसमाज ने तो आर्थिक सहयोग किया ही था किन्तु महात्मा हंसराज की अर्थ शुचिता (ईमानदारी) पर अन्य समुदाय के लोगों को इतना विश्वास था कि उन्होंने यह शर्त रखी कि उनके द्वारा भेजे गये एक एक पैसे का सदुपयोग महात्मा

ऋषि-समर्पित व्यक्तित्व महात्मा हंसराज जी

• सोमदेव शास्त्री

के द्वारा ही होगा। इसी विचार धारा से प्रभावित होकर मुम्बई के सर फिरोजशाह मेहता ने लगभग सात हजार रु. एकत्रित कर महात्मा को भेजा। उस समय लाहोर से प्रकाशित दैनिक पत्र 'पैसा' के संपादक दादा ने आर्यसमाज की इस विषय में बहुत प्रशंसा की थी। यदि सरकार द्वारा व्यय की गयी राशि आर्य समाज को दी गयी होती तो सबको समान सहायता पहुँचती। आर्यों ने सभी को अन्न-वस्त्र और औषधि दी, झोपड़े भी बनवाकर दिये। आर्यों ने पशुओं के शव भी निकाले, कागड़ा की वेश्याओं के झोपड़े बनवाये, उन्होंने सेवा कार्य से सिद्ध कर दिया कि उनके हृदय में ईश्वर ने कैसी मानवीय भावना भरी है

महामारी फैली तो महात्मा आर्यजनों को भेजा। जहाँ रोगी भी चले गये वहाँ पं. रलाराम वा की, उन्हें मृत्यु से बचाया, पं ने कहा था कि "अब हमारी इस सेवा भावना और महात्मा ने कर पादरी स्टोक्स ईसाई धर्म स्वामी सत्यानन्द" बन गये।

मुल्तान में जब 'प्लेग' की महामारी फैली तो महात्मा हंसराज ने सेवाकार्य के लिये आर्यजनों को भेजा। जहाँ रोगी को छोड़कर पारिवारिक जन भी चले गये वहाँ पं. रलाराम बाजवाड़िया ने रोगियों की सेवा की, उन्हें मृत्यु से बचाया, जिसको देखकर पादरी स्टोक्स ने कहा था कि "अब हमारी आवश्यकता यहाँ नहीं रही है"। इस सेवा भावना और महात्मा हंसराज के जीवन से प्रभावित होकर पादरी स्टोक्स ईसाई धर्म को छोड़कर वैदिक धर्म 'स्वामी सत्यानन्द' बन गये।

अनाथों के नाथ

भूकम्प हो, महामारी रोग हो अथवा अकाल, कोई भी आपदा जब भी आयी महात्मा हंसराज सदा उस समय जन सेवा के कार्य में अग्रणी रहे। राजस्थान में सन् 1899 में भयंकर अकाल पड़ा भूख से व्याकुल व्यक्ति मृत्यु का ग्रास बन रहे थे। उस समय महात्मा हंसराज ने डी. ए.वी. कालेज के छात्रों और कार्यकर्ताओं को, पीड़ित व्यक्तियों को बचाने के लिये लाला लाजपतराय के साथ राजस्थान भेजा, और भोजन-पानी की व्यवस्था से अनेक व्यक्तियों के प्राणों की रक्षा की।

इतना ही नहीं एक बालक को मरी हुई की लाश (शव) से उठाया, उसे फिरोजपुर अनाथालय में रखा, उसका भरण पोषण पालन किया, जो आगे चलकर पूर्वी उत्तर प्रदेश में डा. गंगासिंह भजनोपदेशक के नाम से विख्यात हुआ जीवनभर आर्यसमाज का प्रचार करता रहा तथा अन्तिम समय में अपने पुत्रों (विजयपाल-महीपाल और वेदपाल) को शपथ दिलायी कि जीवन भर आर्यसमाज का कार्य करेंगे क्योंकि मेरा जीवन आर्य समाज व महात्मा हंसराज तथा लाला लाजपतराय के कारण है। ये तीन पुत्र आजीवन आर्यसमाज का कार्य करते रहे हैं। जिनमें श्री विजयपालजी शास्त्री तो आर्यसमाज मैस्टर्न रोड कानपुर व मन्त्री तथा दोनों भाई (महीपाल जी और वेदपाल जी) आर्यसमाज के भजनोपदेशक रहे। वे स्वयं यह घटना सुनाया करते थे इस तरह शिक्षण कार्य के साथ-साथ महात्माजी ने सेवाकार्य में अपना कीर्तिमान स्थापित किया।

महात्मा जी का सन्देश

महात्मा हंसराज का जीवन एक कुन्द की तरह जाज्वल्यमान था, सभी के प्रति उदारमना थे। आर्यसमाज उपदेशक पं. विश्वनाथ जी (जो आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बद्ध थे) के पुत्र वेदप्रकाश की कालेज की फीस ही माफ नहीं की अपितु उसके छात्रवृत्ति भी दी। "कालेज प्रादेशिक सभा के अन्तर्गत, पं. विश्वनाथ जी प्रतिनिधि सभा के उपदेशक हैं, आपने ऐसा क्या किया?" ऐसा किसी के कहने पर महात्मा जी ने कहा कि पं. विश्वनाथ जी प्रचार तो आर्यसमाज का ही कर रहे हैं। यह उदारता का सन्देश महात्मा जी हमें दे रहे हैं जो अपने प्रियजनों को पंच सकार का उपदेश देते रहते थे। पंच सकार इस प्रकार है—

1. सन्ध्या 2. सत्संग। (आर्यसमाज के सत्संग में जाना)

3. स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग 4. स्वाध्याय 5. सेवा

जनसेवा समाज-कल्याण और परोपकार के जीवन में आध्यात्मिकता चाहिये और इसके लिये सन्ध्या-सत्संग और स्वाध्याय अत्यावश्यक हैं। महाविद्यानन्द का स्मारक (डी.ए.वी. शिक्षण संस्था) सदा उन्नतशील रहे, इस पौध को महात्मा हंसराज ने अपने तप-त्याग से सींचा था। यह विशाल वृक्ष सदा फलता-फलता रहे और हम सभी महात्मा जी के जीवन से प्रेरणा लें।

309 मिल्टन अपार्टमेंट जुहू कोलिबाड़ा मुम्बई
मो. 9869651311

‘సమయం ఎక్కువ లేదు’

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

ప్రపంచంలో నూరే మతం ఆచార్యుడికీ చరిత్రలో ఎన్నడూ దక్కని అపూర్వ గౌరవాన్ని స్వామి శ్రద్ధానందకు ఇచ్చి జమామసీదులో ఆయన చేత ప్రవచన చేయించిన ముసల్మాన్లకు నాలుగేళ్లు తీరకూడా అదే స్వామి కంటగింపు అయ్యాడు. ఆయన విశిష్ట వ్యక్తిత్వం ఎరిగి, కడదాకా ఆదరభావం చూపిన మహమ్మదీయులు ఎంతోమంది ఉన్నా... మొత్తం మీద దేశంలోని ముస్లిం సమాజానికి స్వామి మీద అంతకంతకూ అనుమానం, అసహనం పెరగసాగాయి.

ఖిలాఫత్తో మొదలుపెట్టి ముస్లింల సంతృప్తికరణను గాంధీగారు ఒక విధానంగా చేపట్టి, కరకు మతవాదులు ఆడించినట్టల్లా ఆడేకొద్దీ కాంగ్రెసులో స్వామిని అభిమానించిన లిబరల్ ముస్లింల పలుకుబడి తగ్గిపోయింది. 1923లో ‘శుద్ధి’ ఉద్యమానికి శ్రద్ధానంద నాయకత్వం వహించాక ముస్లిం మత వాదులకు ఆయన పట్ల ద్వేష భావం మరి పెరిగింది. ఆయనను దూషిస్తూ ముస్లిం పర్గాల పత్రికల్లో వ్యాసాలు, సంపాదకీయాలు విరివిగా వచ్చాయి. నానా దుర్భాషలాడుతూ, పద్ధతి మార్పుకోకపోతే చంపుతామని బెదిరిస్తూ వచ్చిన ఊరూ పేరూ లేని ఉత్తరాలకైతే లెక్కలేదు.

కాలం మారింది; పరిస్థితులు మారాయే తప్ప శ్రద్ధానంద మనఃస్థితి మారలేదు. మహమ్మదీయుల పట్ల ఆయన వైఖరి మారలేదు. కాంగ్రెసు వత్తానుతో విజృంభించిన ముస్లిం మతోన్మాదాన్ని తీవ్రంగా ఖండించాడే తప్ప ముస్లిం సమాజం పట్ల ఆయన ఆది నుంచి సుహృద్భావమే చూపాడు. హిందూ- ముస్లిం ఐక్యత పట్ల 1919 ఢిల్లీ సత్యాగ్రహ ఆందోళన రోజుల్లో ఆయనకు ఎంత నిబద్ధత ఉందో చివరి శ్వాస విడిచే వరకూ అంతే తహతహ ఉంది.

దీనికి ఒక్క దృష్టాంతం చాలు. 1926 సంవత్సరానితాన గువాహాతిలో అఖిల భారత కాంగ్రెసు మహాసభలు జరగనున్నాయి. తప్పక దయ చేయవలసిందని కోరుతూ ఆహ్వాన సంఘాధ్యక్షుడు శ్రద్ధానందస్వామికి సాదరంగా లేఖ రాశాడు. శరీర స్థితి సహకరించనందున రాలేకపోతున్నాను మన్నించవలసిందని స్వామి జవాబు ఇచ్చాడు. కనీసం మహాసభకు తమ సందేశమైనా పంపించండి అని స్వాగతాధ్యక్షుడు తంతి ఇచ్చాడు. స్వామి తన సందేశాన్ని కుమారుడు ఇంద్ర వాచస్పతికి చెప్పి తిరిగు తెలిగ్రాం ఇప్పించాడు. అందులో ఉన్నది ఒకే వాక్యం.



On Hindu-Muslim unity depends future well being of India.

(హిందూ - ముస్లిం ఐక్యత మీద భారతదేశ భవిష్యత్తు ఆధారపడుతుంది)

తీవ్ర అస్వస్థ స్థితిలో మరణశయ్య మీది నుంచి ప్రశాంత చిత్తంతో పలికిన ఈ పలుకు ముమ్మాటికీ మా తండ్రిగారి అంతరాత్మ సందేశంగా భావించాలి-అంటాడు. మేరే పితా పుస్తకం (156 పే.)లో ఇంద్ర విద్యా వాచస్పతి.

స్వామి అంతరాత్మ ఎంత శుద్ధంగా ఉంటేనేమి ముస్లిం మత వర్గాల్లో కలగుండు పెట్టిన ‘శుద్ధి’ సంఘటన ఉద్యమాల ప్రేరణ, ముఖ్య భూమిక ఆయనదే కావడంతో ఆయన పట్ల మహమ్మదీయ మత దురభిమాన శక్తులకు తీవ్ర ఆగ్రహం రగిలింది. ఎవరు ఎన్ని రకాల అడ్డం కొట్టజూసినా మల్ఖానా రాజపుత్రుల శుద్ధీకరణ వేల సంఖ్యలో జరుగుతూ, మహాద్వమంలా ముందుకు సాగడం ముస్లిం మతోన్మాద వర్గాల్లో కనిపించింది. సరిగ్గా అదే సమయంలో పుండు మీద కారంలా మరో వివాదం చెలరేగింది.

‘శుద్ధి’ ఉద్యమ ప్రభావంవల్లో, మరేదైనా కారణం చేతో తెలియదు. కరాచీలో అస్సారి బేగం అనే ఇద్దరు పిల్లల తల్లి ఇస్లాంను వదిలి హిందూ మతంలోకి మారదలిచింది. ఓ రోజు ఇంట్లో ఎవరికీ చెప్పకుండా ఇద్దరు బిడ్డలను తీసుకుని రైల్వేకి ఢిల్లీ వెళ్లింది. ఆర్య సమాజ్ వారిని కలిసింది. ఆమె కోరిక ప్రకారం వారు ఆమెకూ, ఇద్దరు పిల్లలకూ యథావిధిగా శుద్ధీకరణం చేశారు. శాంతిదేవి అని ఆమెకు పేరు పెట్టి, ఢిల్లీలోని వనితా ఆశ్రమంలో చేర్చారు. అక్కడ ఆమె సంస్కృతం, హిందీ నేర్చుకుంటూ వైదిక ధర్మం గురించి తెలుసుకోసాగింది.

కొంతకాలానికి తండ్రి, భర్త ఆమె ఆచూకీ ఎలాగో పసిగట్టి ఢిల్లీ చేరారు. శాంతిదేవిని కలిసి మళ్లీ మతం మారి పూర్వ జీవితం కొనసాగించమని రకరకాలుగా ఒత్తిడి చేశారు. ఆమె దేనికి లొంగలేదు. దౌర్జన్యంగా లాక్కుపోకుండా ఆర్య సమాజ్ కార్యకర్తలు ఆమెకు రక్షణగా ఉన్నారు. ఇక చేసేది లేక బంధువులు తిరిగి వెళ్లారు. ఇదంతా శ్రద్ధానంద స్వామి దుర్భార్గమేనని ఎవరో వారికి నూరిపోశారు. కుట్రపన్ను పిల్లల తల్లిని అవహరించి బలవంతంగా మతం మార్పించి, నిర్బంధించారని శ్రద్ధానంద మీద, ఆయన కుమారుడు ఇంద్ర మీద, ఇంకో వీలుగురు ఆర్య సామాజికుల మీద వారు క్రిమినల్ కేసు పెట్టారు.

నిజానికి స్వామీజీ ఏ పాపం ఎరుగదు. ఆయనకుగాని, మిగతా వారికిగాని ఆ కేసుతో ఎటువంటి సంబంధం లేదు. అసలు ఆ బేగం ఇష్టపడి ఢిల్లీ వచ్చి మతం మారిన సంకతి తరవాత ఎప్పుడోగాని వారికి తెలియరాలేదు. అయితేనేమి ? ఢిల్లీ కోర్టులో ఆరు నెలలు వారి మీద కేసు నడిచింది. ఏ ఒక్క అభియోగానికి పిసరంత రుజువు కనపడక పోవడంతో అందరూ నిర్దోషులని 1926

డిసెంబరు 4న కోర్టు తీర్పు చెప్పింది.

కేసుయితే న్యాయ ప్రకారం తేలిపోయింది. కాని ఈ వ్యాజ్యం రేకెత్తించిన విద్వేషం కారణంగా శ్రద్ధానంద మీద ముస్లింలలో కసి పెరిగింది. కేసు నడుస్తుండగా ఆయన మీద జరిగిన దుష్ప్రచారపు విషప్రభావం కేసును కొట్టేశాక కూడా మత ఛాందస వర్గాల్లో బాగా పనిచేసింది. ఎక్కడో కరాచీలో కాపురం చేసుకుంటున్న మహమ్మదీయ మహిళనే పథకం ప్రకారం తన దగ్గరికి రప్పించుకుని, హిందూ మతంలోకి మార్పించిన ఆ 'కాఫిర్', ఇస్లాంకు శత్రువు అన్న అభిప్రాయం కొన్ని వర్గాల్లో ప్రబలింది. 'కోర్టు వదిలిరా మేము నిన్ను వదలము. చంపి తీరుతాం' అని బెదిరింపు ఉత్తరాలు శ్రద్ధానందకు మరీ ఎక్కువయ్యాయి.

'పరిస్థితి బాగా లేదు. ఇకనైనా అంగ రక్షకుడిని పెట్టుకోండి' అని సన్నిహితులు బలవంతపెట్టారు.

'అది పిరికివాళ్లు చేసుకునే ఏర్పాటు' అని ఖండితంగా తోసిపుచ్చాడు స్వామీజీ.

అంతేకాదు. తమ జాగ్రత్తలో తాము ఉండాలని సహచరులు వంతులు వేసుకుని ఆయనకు కావలా కాన్సూటే, వారికి తెలియకుండా ఆయన ఒక్కడే బయటికి వెళ్లి ముసల్మాన్ల ప్రాబల్యంగల సదర్ బజార్ లాంటి ప్రాంతాల్లో నిర్భయంగా తిరిగి వస్తూండేవాడు. తాను ఎంతగానో ప్రేమించే ముస్లిం సోదరులు తనకు హాని తలపెట్టరని ఆయనకు నమ్మకం.

కాని - స్వామికి అంతర్వాణి చెబుతూనే ఉన్నది. అంత్యకాలం ఆసన్నమైనదని.

అప్పటికే ఆయనకు దెబ్బయ్యో ఏడు నడుస్తున్నది. నిరంతరం దేశమంతటా తిరుగుతూ, అహర్నిశలూ శ్రమిస్తూ ఎక్కడ సమస్య తలెత్తితే అక్కడికి ఉరుకుతూ, శరీరాన్ని చాలా కష్టపెట్టాడు. ఉత్సాహం ఎంత ఉన్నా దేహం శిథిలమవుతున్న సంగతి ఆయనకు తెలుస్తూనే ఉంది. అయినా పళ్ల బిగువున బండి లాగిస్తున్నాడు.

ఒకవైపు కోర్టులో క్రమినల్ కేసు నడుస్తూండ గానే స్వామీజీని ప్రసిద్ధ పారిశ్రామికవేత్త ఘనశ్యామ్ దాస్ బిర్లా ఏదో పనిలో తనకు అండగా ఉండటానికి వారణాసి రమ్మని కోరుతూ టెలిగ్రాం

ఇచ్చాడు. బిర్లాకు స్వామి అంటే గురి. అతడి మాట కాదనలేక ఓపిక లేకపోయినా స్వామీజీ కాశీ వెళ్లాడు. అక్కడ జబ్బుపడ్డాడు. ఢిల్లీ తిరిగొచ్చాక ఆరోగ్యం మరి పాడయిపోయింది.

'ఇక్కడ ఉంటే మీకు విశ్రాంతి దొరకదు. ఎప్పుడూ ఎవరో ఒకరు ఏదో పని మీద వస్తూనే ఉంటారు. కనీసం కొన్నాళ్లు గురుకులానికి వెళ్లండి. రెస్టూ దొరుకుతుంది. అక్కడి గాలి మంచిది' అని సలహా ఇచ్చారు సహచరులు. వారి ఒత్తిడి మీద స్వామీజీకి 1926 డిసెంబరు 8న హరిద్వార్ బయలుదేరి వెళ్లాడు. కాని దారిలో తీవ్రమైన చలిగాలుల వల్ల ఆయన చాలా అవస్థపడ్డాడు.

కాంగ్డీ గురుకుల్ చేరగానే డాక్టర్ సుఖదేవ్ స్వామిని పరీక్షించి, బ్రాంకో న్యూమోనియా జబ్బు ముదిరిందని తేల్చాడు. చికిత్స మొదలు పెట్టాడు. స్వామీజీకి బాగా ఇవ్వడైన డాక్టర్ అన్నారీని కూడా పిలిపించారు. ఆయన వచ్చి మందులివ్వగానే జబ్బు కాస్త నెమ్మదించింది. అంతలో డాక్టర్ అన్నారీ తప్పనిసరిగా వెనక్కి వెళ్లవలసి వచ్చింది. ఆయన బండెక్కిన కొద్ది గంటలకే జబ్బు తిరగబెట్టింది. వైద్యుల సలహా ప్రకారం స్వామిని ఎలాగో ఢిల్లీ చేర్చారు.

ఆ స్థితిలో తమ అభిమాన నాయకుడిని చూసిన వాళ్లకు కళ్లు చెమర్చాయి. 'స్వామీ! మీరు పూర్తిగా విశ్రాంతి తీసుకోండి. ఏమైనా పనులుంటే మేము చేసి పెడతాము' అన్నాడో భక్తుడు.

స్వామి చిరునవ్వు నవ్వి 'సమయం చాలా తక్కువ ఉంది. చెయ్యాల్సిన పనులు చాలా మిగిలాయి' అన్నాడు. అందరి గుండెలూ బరువెక్కాయి. 'మీకేమీ కాదు స్వామీజీ! జబ్బు త్వరలో నయమవుతుంది. మళ్లీ మీరు మునుపటిలా పని చేసుకోగలుగుతారు' అని డాక్టర్లు, శిష్యులు భరోసా ఇవ్వబోయారు. 'నేను మళ్లీ బాగవుతానని నాకు నమ్మకం లేదు' అన్నాడు స్వామి నిర్విప్లంగా.

స్వతహాగా శ్రద్ధానంద స్వామి ఆశావాది. బేలతనం ఆయన ఎన్నడూ ఎరగడు. ఆయన ఆరోగ్యం అంతకుముందూ పలుమార్లు పాడయింది. దగ్గరున్నవారు బెంగపడ్డా స్వామికి మాత్రం తనకు ఏదో అవుతుందన్న చింత ఏనాడూ లేదు. 'ఎందుకలా బెంబేలు

పడుతున్నారు ? ధర్మసేవకు నా శరీరంతో పని ఉంది. దాని రక్షణ పరమాత్మ చేస్తాడు' అని తానే ఒకరికి ధైర్యం చెప్పేవాడు.

అలాంటిది 1926 చివరిలో న్యూమోనియాకు లోనయ్యాక స్వామి వైఖరి మారి పోయింది. నవంబరు ఆఖరు వారంలో లాహోర్లోని గురుదత్ భవన్లో ధార్మిక ప్రవచనం చేస్తూ ఆ నగరంలో ఇక అదే తన ఆఖరు కార్యక్రమమన్న సూచన ఇచ్చాడు. తరవాత వేరేచోట్ల పాల్గొన్న ఒకటి రెండు నభల్లోనూ వీడ్కోలు ప్రసంగం వలె మాట్లాడాడు. గురుకుల్ నుంచి ఢిల్లీ నయేబజార్లోని తన నివాసానికి (తరవాత దానికి 'బిలిదాన్ భవన్' అని పేరు పెట్టారు) తిరిగొచ్చాక శరీర త్యాగం గురించి స్వామి తరచుగా మాట్లాడుతూండే వాడు.

ఓ రోజు దీనదయాళ్ శాస్త్రి అనే మహా పండితుడు స్వామి కుశలం కనుక్కోవడానికి వచ్చాడు. 'మీకు త్వరలో నయమవుతుందని డాక్టర్లు చెబుతున్నారు. అద్దైర్యపడకండి' అని సాంత్య వచనాలు పలికాడు.

'నాకైతే ఇంకా బతకాలన్న కోరిక లేదు' అన్నాడు స్వామి నిర్వికారంగా.

'స్వామీజీ ! నాకంటే మాలవీయగారు రెండున్నర ఏళ్లు పెద్దవాడు. ఆయన కంటే మీరు ఒక సంవత్సరం పెద్ద. మనమందరమూ చేయవలసింది ఇంకా చాలా ఉంది. మీరు మోక్షంకోసం ఎందుకు తొందర పడుతున్నారు?' అని వచ్చినాయన తెలుసుకో గోరాడు.

"పండితజీ ! ఇస్ సమయే ముర్ఖే మోక్ష కీఇచ్చా నహీ. మైతోచోలా బదలీకర్ దూస్రా శరీర్ ధారణ్ కర్నా చాహ్తాహు. అబ్ యహ్ శరీర్ సేవాకీ యోగ్య నహీ రహా. ఇచ్చాహై ఫిర్ భారత వర్షమే హీ పైదా హోకర్ ఫిర్ సేవా కర్నా"

(పండితజీ ! ఈ సమయాన నాకు మోక్షం కావాలన్న కోరిక లేదు. ఈ అంగరఖా మార్చి వేరే శరీరాన్ని ధరించాలనే నేను కోరుతున్నాను. ఈ శరీరం ఇప్పుడు సేవకు పనికిరాదు. మళ్లీ భారతవర్షంలోనే పుట్టి ఇలాగే సేవ చేయాలని నా కోరిక) అన్నాడు స్వామి గంభీరంగా.

(మేరే పితా, ఇంద్రవిద్యా వాచస్పతి, పే. 158)



SWAMI AGNIVESH

Who cares about temple entry?

Male-dominated 'places of worship' are, in fact, places where god doesn't reside

I AM afraid the women of our country are getting it wrong. Temple entry has nothing to do with the right to pray. Equality with men, in all respects other than limited biological functions like childbirth, is a fundamental right of all women. There is no question that subjecting women to discrimination is a crime and a shame. It deserves to be denounced.

But equating the "right to pray" with temple entry is a different matter altogether. It is like equating entry, say, into somebody's bedroom with the right to breathe — for air is also present in bedrooms.

The right to pray cannot be separated from two basic questions: Who are we praying to? What does it mean to pray? If it is to god that we are praying, it does not have to be done in a temple. Temple, kitchen and market place are all alike in respect of god's presence. Men may be irrational enough to believe that god lives in only their temples and that they have a monopoly over such a god. That is why they are, quite rightly, worried about women entering their temples. They

are right to worry that if women are allowed into these structures of make-believe, serious harm could come to their gods. The reason is that women are feared to be more rational. Rational creatures will know only too soon that omnipresent god does not stay confined to man-made temples.

If it is to the genuine god that we wish to pray, do we really have to go to a temple, church, mosque or gurdwara? Do we have to go to Bethlehem or Mecca to drink water or brush our teeth? Can't these be done anywhere? Why is praying any different? No human being, male or female, with a modicum of common sense should pray to a god who is imprisoned in a man-made structure. A god who is man's slave is a poor, pathetic god indeed.

Now, what is prayer or worship? All religions are utterly corrupted by the domination of man. Religions, as feminists quite rightly lament, are patriarchal. But religion of this kind is the ghost of a religion, and not its true form. Guru Nanak did not have to pray in a temple. Prophet Muhammad was not enlightened in a temple, but on a mountain. The

purpose of prayer is to attain the strength to lead a godly life. It is an insult to women to assume that they can receive it only from man-made temples with which god has nothing to do. Women should know that not only they but god is also not allowed in these temples and mosques.

Being denied entry into certain temples or mosques, therefore, is not a spiritual issue. It is only a legal issue. That so-called "places of worship" are man-dominated and seats of discrimination must open their eyes to the fact that these are places where god is routinely mocked. Practising discrimination in the name of god is the worst form of irreligion. A place where this is done has nothing to do with god or spirituality. Why do you want to waste your time and money there? I am sure that the women in this country have better sense than that.

The core issue today is not temple entry for women. It is the liberation of god from the pious prisons we have created for the divine. It is because god is confined to these quaint and funny places that the fear of god

does not operate elsewhere. That is the curse of our country if only we recognised the omnipresent god who is with us in our workplaces, in our relationships, in our marketplaces, this country would have been free from corruption, caste violence and systemic oppression. By creating man-dominated places of worship, we confine god to convenient spots and claim the rest of the country to practise corruption, injustice, violence and oppression.

Why did Gandhi give up on temples? Was it not because of his spiritual enlightenment? Which embodiment of spiritual light has ever associated temples or mosques with god? Who can claim that he has become a better human being because of a temple? It is a shame that even in the 21st century, we have not taken leave of superstition and obscurantism. The time has come for us to allow the light of reason into our religious life. God is light, not darkness.

The writer is a Vedic scholar and social activist

नदी के तट पर सिंहस्थ कुंभ में दुनियाभर के आस्थावान लोगों का सागर उमड़ पड़ा है। इतने विशाल जनसमूह की

भारत के लोकतंत्र का यह दुर्भाग्य है कि यहाँ बहुत सारकार लेकर भी नॉर्ड मादी वह सब नहीं कर सकते, जो एक राजतंत्र में करना बहुत सरल होता है। प्रजा की भावना को समझ कर राजा तुल्य निर्णय ले सकता है, लेकिन लोकतंत्र का चुनाव हुआ प्रधानमंत्री अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दबावों के तहत काम करता है। इसलिए कई बार चाहते हुए भी वह सब नहीं कर पाता, जिसकी उससे अपेक्षा की जाती है।

इन दोनों ही सवालों पर मेरा मत 30 वर्षों से पूरा समर्थन रहा है। पर मुझे लगता है कि यह मुझे राजनीतिक नहीं है। चुनवी भी नहीं है, क्योंकि जब इनको राजनीति से जोड़ा जाता है तब यह और उलझ जाते हैं। यह बात सही है कि राम जन्मभूमि आंदोलन से भाजपा को भारत में बड़ा जनधार मिला, लेकिन उसके बाद इस मुद्दे की राजनीतिक सार्थकता समाप्त हो गई। प्रमाण सामने हैं कि जब-जब इस मुद्दे को लेकर भाजपा ने राजनीति करनी चाही, तब-तब परिणाम

अपेक्षित नहीं रहे। इसलिए चाहे उत्तर प्रदेश का भावी चुनाव हो या अन्य किसी राज्य में, इन मुद्दों को आगे चुनाव से हट कर भारत के सांस्कृतिक उत्थान के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाए, तो इनके सफल होने की ज्यादा संभावना है।

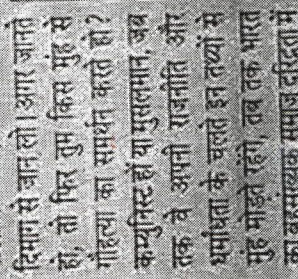
देशी गाय की सार्यकता, उसका वैज्ञानिक महत्त्व, उससे किसान को आर्थिक लाभ और बिना किसी धर्म भेद के हर किसी व्यक्ति को होने वाले स्वास्थ्य लाभ, कुछ ऐसे स्वयंसिद्ध तथ्य हैं, जिनके कारण देशी गाय की हत्या पर प्रतिबन्ध अविलंब लागाना



राजनीति नहीं करनी चाहिए क्योंकि जो ऐसी राजनीति कर रहे हैं, वह या तो देशी गाय के इन गुणों से

परिचित नहीं है या फिर परिचित होकर भी वे अपनी राजनीति के कारण गौहत्या प्रतिबंध को समर्थन नहीं देना चाहते। अगर यह वृत्ति है, तो मेरी दृष्टि में यह समाजदोष ही नहीं, देशद्रोह से कम नहीं है। मैं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अपने सहपाठी रहे कम्युनिस्ट नेता

सीसितामम येचुरी से एक प्रश्न पडूना चाहता हूँ। क्या तुमने देशी गाय के मूत्र से रोगों में उपयोग पर कोई जानकारी हासिल की है? क्या तुमने देशी गाय के गोबर की खाद की कृषि के लिए उपयोगिता पर उपलब्ध वैज्ञानिक अध्ययनों को देखा है? क्या तुमने गोबर के फायदों को जाना है? अगर नहीं तो खुले



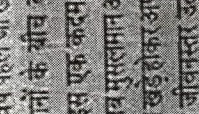
जीता होगा क्योंकि भारत सोने की चिड़िया था, जब इन मूल्यों का समाज में सम्मान था। जब से हमने भारत के इस ऋषिजन्य ज्ञान को तिलांजलि देकर औपनिवेशिक शासकों के श्रोत्रोत्प्रेषण पथिमी ज्ञान और जीवशैली को अपनाया है, तब से हमारा समाज गरीब, बीमार, दुखी और नरक होता चला गया है।



कार्ल मार्क्स की तरह अगर आपको सर्वहारा को चिन्ता है, तो सर्वहारा के हित में आप लोगों को चाहिए कि गौवश आधारित जीवनशैली अपनाने का संदेश सर्वहारा को दें। कार्ल मार्क्स ने अपना सिद्धांत प्रतिपादित करने के

लिए जवानी के दो दशक पुस्तकों के ढेर में बिता दिए। उन्हें भारत की इस सार्वभौमिक संस्कृति को जानने का समय ही नहीं मिला। अगर मिलता तो वे अपने ग्रंथ 'कैपिटल' में एक अध्याय लिखते कि, "दुनिया के मजदूरों अगर सुख से जीना चाहते हों, तो भारत की देशी गाय को जीवन में अपना लो।"

रही बात राम मंदिर की, तो हमने पिछले 30 वर्षों में बार-बार यह लिखा और बोला है कि काशी, मथुरा और अयोध्या में भगवान शिव, भगवान राम और भगवान कृष्ण के मंदिरों का निर्माण होने से



मुसलमानों का आहत होगा, बल्कि लाभ ही होगा क्योंकि 500 वर्ष पहले जो खाई हिंदू-मुसलमानों के बीच की गई थी, वह इस एक कदम से पट जाएगी। तब मुसलमान और हिंदू एक साथ खड़े होकर अपने-अपने देश का जीवनस्तर उठाने की तरफ आगे बढ़ेंगे। आज पूरे विश्व का मुसलमान समाज पश्चिम की दादागिरी से दुखी है और नाराज है। भारत की सनातन संस्कृति में आस्था रखने वाला हिंदू समाज भी पश्चिमी संस्कृति से आहत और नाराज है। इस तरह हम हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे के दुश्मन नहीं, बल्कि हम दोनों संस्कृतियों की दुश्मन पश्चिमी संस्कृति हैं, जिसे अपने जीवन से जितनी जल्दी हो और जितना ज्यादा निकाल दिया जाए, हमारा समाज सुखी और संपन्न हो जाएगा। यह बात दोनों धर्मों के धर्माचार्यों को भी समझनी चाहिए। सिंहस्थ कुंभ में स्नान करने के बाद बड़े पवित्र मन से मैं यह याचना दोनों धर्मों के धर्माचार्यों से कर रहा हूँ, आगे हरि इच्छा।

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్వీభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna**
 Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
 Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
 Annual subscription Rs. 100/- సంపాదకులు - విఠల్రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

15 I

N



సభ్యత్వ పమోదు కార్యక్రమ సూచన

ఆర్యప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ కు అనుబంధితమై వున్న...

1939 సంవత్సరములో వ్యవస్థాపిత శాఖ

ఆర్యసమాజ్ స్వాభాయిన్పల్లి సికింద్రాబాద్ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

1-9-37, 38, పెద్దతోకట్ట, స్వాభాయిన్పల్లి,

సికింద్రాబాద్-500011. ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

సాప్తాహిక సత్సంగం : ప్రతి శనివారం సా. 6 గం.,

ప్రతి ఆదివారం ఉ. 9 గం.లకు జరుగును

అందరూ ఆహ్వానితులే. గురుజీ - సెల్ : 9652669732

ఎక్కడివారైన వర్సలేదు అధార్ కార్డ్ జిరాఫ్ తీసుకువచ్చి కార్యాలయములో
 సభ్యత్వ ప్రవేశ పత్రములు పూర్తి ఉచితముగా ఉ. 6 గం. నుండి సా. 6 గం.ల వరకు పొందగలరు. ఆర్య సమాజ్ శాసనము ఉపనియమాలకు
 లోబడి ప్రవేశము ఇవ్వబడును. సజ్జనులు ఇప్పటి వరకు ఏ సమాజంలో
 సభ్యత్వం లేనివారు ప్రవేశ పత్రం ఉచితముగా పొంది సభ్యులు కాగలరు.
 (ప్రెసిడెంట్ : వరుణ్ రాజ్ ప్రజరర్ : అంజిరెడ్డి సెక్రటరీ : బృహచ్చతి

सभ्यत्व नामांकित सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना से अनुबंधित

1939 में स्थापित शाखा

**आर्यसमाज न्यूबोईनपल्ली, सिकिन्दाबाद,
 आ.प्र.-तेलंगाना**

1-9-37, 38, पेढातोकट्टा, न्यूबोईनपल्ली, सिकिन्दाबाद-आ.प्र.-तेलंगाना

साप्ताहिक सत्संग हर शनिवार सायं 6 बजे

हर रविवार प्रातः 9 बजे होगा

सभी आमन्त्रित है - गुरुजी सेल : 9652669732

आर्य समाज में विश्वास रखने वाले कोई भी सदस्य अपने आधार कार्ड की
 जिराक्स कॉपी के साथ समाज कार्यालय में सदस्यता प्रवेश पत्र प्रातः 6 बजे
 से सायं 6 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं। आर्य समाज के नियमों के अनुसार
 सदस्यता स्विकार की जाएगी।

प्रेसिडेंट-वरुणराज

ट्रजस-अन्निरेड्डी

सेक्रेटरी-बृहस्पति

ఆర్య సమాజ్

ఏదుటి వ్యక్తిలోని ప్లస్ పాయింట్లను చూచి బంధం పెంచుకో ఒక్క నయా పైన సాయం చేయకు కానీ ఒక్కటంటే ఒకే ఒక్క అక్షరమైన సరే ఇతరుల పట్ల
 చెడుగా మాట్లాడకు చాటిలు చెప్పుకు నీతో అయితే సహాయం చేయ్యి కాని హాసీ మాత్రం చెయ్యకు. నిజమైన ఆనందమయ జీవితం, నిజమైన సుఖమయ జీవితం
 నిజమైన శాంతిమయ జీవితం పొందు.

బృహస్పతి గురూజ్ - సెల్ : 9652669732.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
 Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
 సంపాదక: श्री विठ्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्रडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।

प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाजार, हैदराबाद तेलंगाना-95.